



Wuzu Ka Tariqa (Gujarati)

વુઝુ કા તરીકા



શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાજરતે અલલામા મૌલાના અબૂ રિવાલ

મુહમ્મદ ઈબ્દ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી دامت برکاتہم
السلامتہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अः शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अह्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरि २-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ
लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अह्लाह अज़ुज़ल्ल हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल इरमा ! ओ अ-अमत और बुज़ुर्गी वाले ! (المستطرف ج ١ ص ١٠٠ دار الفكر بيروت)
नोट : अव्वल आभिर ओक ओक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना
व अकीअ
व मस्जिदत
13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.



वुजू का तरीका

येह रिसाला (वुजू का तरीका)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी हजरत
अह्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरि २-जवी जियाई
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उद्दू ज़बान में तहरीर इरमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल
अत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-अतुल मदीना से शाओअ करवाया
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाओ तो मजलिसे तराजिम को
(अ जरीअओ मक्तूब या ई-मेईल SMS) मुत्तलअ इरमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-अतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिइफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

वुजू का तरीका (उ-नई)

येह रिसाला अव्वल ता आभिर पूरा पढिये, कवी ईम्कान
 हे के आप की कई ग-लतियां आप के सामने आ जाअें.

दुइए शरीफ़ की इमीलत

सरकारे दौ आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले
 मुह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज़्जम है : “जिस ने दिन
 और रात में मेरी तरफ़ शौक व मडबबत की वजह से तीन तीन मर्तबा दुइए पाक
 पढा अदलाह عَزَّ وَجَلَّ पर डक है के वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह
 भुश दे.”

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٣٦٢ حديث ٩٢٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का घरके रसूल

डउरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक बार अेक
 मकाम पर पडोंय कर पानी मंगवाया और वुजू किया फिर यकायक
 मुस्कुराने और रु-इका से इरमाने लगे : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ?

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रहुमतें भेजता है. (स्म)

फ़िर जुद ही ईस सुवाल का जवाब देते हुअे इरमाया : मैं ने देखा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वुजू इरमाया था और भा'दे इरागत मुस्कुराअे थे और सहाबअे किराम الرضوان से इरमाया था : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ? फ़िर भीठे भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जुद ही इरमाया : “जब आदमी वुजू करता है तो येहरा धोने से येहरे के और हाथ धोने से हाथों के और सर का मस्ह करने से सर के और पाँउ धोने से पाँउ के गुनाह झु जाते हैं.” (مسند إمام احمد بن حنبل ج ۱ ص ۱۳۰ حديث ۴۱۰)

वुजू कर के पन्दां हुअे शाहे उस्मां कडा : क्यूं तबस्सुम भला कर रहा हूँ ? जवाबे सुवाले मुभातब दिया फ़िर किसी की अदा को अदा कर रहा हूँ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? सहाबअे किराम

الرضوان सरकारे भौरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाते थे. नीज ईस रिवायत से गुनाह धोने का नुस्खा भी मा'लूम हो गया. वुजू में कुल्ली करने से मुंह के, नाक में पानी डाल कर साफ़ करने से नाक के, येहरा धोने से पलकों समेत सारे येहरे के, हाथ धोने से हाथ के साथ साथ नाभुनों के नीचे के, सर (और कानों) का मस्ह करने से सर के साथ साथ कानों के और पाँउ धोने से पाँउ के साथ साथ पाँउ के नाभुनों के नीचे के गुनाह भी झु जाते हैं.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શાપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરૂન)

ગુનાહ ઝડને કી હિકાયત

વુઝૂ કરને વાલે કે ગુનાહ ઝડતે હૈં, ઈસ ઝિમ્ન મેં એક ઈમાન અફરોઝ હિકાયત નક્લ કરતે હુએ હઝરતે અલ્લામા અબ્દુલ વહહાબ શા'રાની قَدَسَ سِرُّهُ النُّورَانِي ફરમાતે હૈં : એક મર્તબા સય્યિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ જામેઅ મસ્જિદ કૂફા કે વુઝૂખાને મેં તશરીફ લે ગએ તો એક નૌ જવાન કો વુઝૂ બનાતે હુએ દેખા, ઉસ સે વુઝૂ (મેં ઈસ્તિ'માલ શુદા પાની) કે કતરે ટપક રહે થે. આપ ને ઈશાદિ ફરમાયા : ઐ બેટે ! માં બાપ કી ના ફરમાની સે તૌબા કર લે. ઉસ ને ફૌરન અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. એક ઔર શાપ્સ કે વુઝૂ (મેં ઈસ્તિ'માલ હોને વાલે પાની) કે કતરે ટપકતે દેખે, આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ઉસ શાપ્સ સે ઈશાદિ ફરમાયા : ઐ મેરે ભાઈ ! તૂ ઝિના સે તૌબા કર લે. ઉસ ને અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. એક ઔર શાપ્સ કે વુઝૂ કે કતરાત ટપકતે દેખે તો ઉસે ફરમાયા : શરાબ નોશી ઔર ગાને બાજે સુનને સે તૌબા કર લે. ઉસ ને અર્ઝ કી : મેં ને તૌબા કી. સય્યિદુના ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ પર કશ્ફ કે બાઈસ ચૂકે લોગોં કે ઉચૂબ ઝાહિર હો જાતે થે લિહાઝા આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને બારગાહે ખુદા વન્દી عَزَّ وَجَلَّ મેં ઈસ કશ્ફ કે ખત્મ હો જાને કી દુઆ માંગી : અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ ને દુઆ કબૂલ ફરમા લી જિસ સે આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કો વુઝૂ કરને વાલોં કે ગુનાહ ઝડતે નઝર આના બન્દ હો ગએ.

(البيزات الكبرى ١٤ ص ١٣٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उंन)

वुजू का सवाब नहीं मिलेगा

आ'माल का दारो मदार निय्यतोँ पर है : अगर किसी अमल में अच्छी निय्यत न हो तो उस का सवाब नहीं मिलता. येही हाल वुजू का भी है, युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “बछारे शरीअत मुभर्रज्ज जिल्द अक्वल” सफ़हा 292 पर है : वुजू पर सवाब पाने के लिये हुकमे ईलाही बज्र लाने की निय्यत से वुजू करना जरूर है वरना वुजू हो जायेगा सवाब न पायेगा. आ'ला उजरत रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उजरत इस्माते हैं : वुजू में निय्यत न करने की आदत से गुनहगार होगा, ईस में निय्यत सुन्नते मुअक़द है. (इतावा र-अविय्या मुभर्रज्ज, जि. 4, स. 616)

सारा बदन पाक हो गया !

दो उदीसों का ખुलासा है : जिस ने بِسْمِ اللَّهِ कह कर वुजू किया उस का सर से पाँउ तक सारा जिस्म पाक हो गया और जिस ने बिगैर اللَّهِ بِسْمِ कहे वुजू किया उस का उतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुजरा.

(سنن دارقطنی ج ۱ ص ۱۰۸-۱۰۹ حدیث ۲۲۸-۲۲۹)

उजरते सय्यिहुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे कलबो सीना, इँज गन्जना, साछिबे मुअत्तर पसीना, बाईसे नुजूले सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशादि इस्माया : “ओ अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब तुम वुजू करो तो ईशादि इस्माया : “ओ अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब तक तुम्हारा वुजू बाकी रहेगा उस वक्त तक तुम्हारे इरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे.”

(الْمُعْجَمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ۱ ص ۲۳ حدیث ۱۸۶)

इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महारज़ान)

इरमाते हैं : बा'ज आरिफ़ीन (رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين) ने इरमाया : जो उमेशा बा वुजू रहे अल्लाह तआला उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशरफ़ इरमाये :
 ﴿1﴾ मलाअेका उस की सोहबत में रज्बत करें ﴿2﴾ कलम उस की नेकियां लिखता रहे ﴿3﴾ उस के आ'ज़ा तस्बीह करें ﴿4﴾ उस से तकबीरे उला फ़ौत न हो ﴿5﴾ जब सोअे अल्लाह तआला कुछ फ़िरिशते त्मेजे के जिन्नो ईन्स के शर से उस की डिफ़ाजत करें ﴿6﴾ सकराते मौत उस पर आसान हो ﴿7﴾ जब तक बा वुजू हो अमाने ठलाही में रहे.

(अैज़न, स. 702, 703)

दुगना सवाब

यकीनन सर्दी, थकन या नज़ला, जुकाम, दर्द सर और बीमारी में वुजू करना दुश्वार होता है मगर फिर भी कोई अैसे वक्त वुजू करे जब के वुजू करना दुश्वार हो तो उस को ब हुकमे हदीस दुगना सवाब मिलेगा.

(الْمُعَجَّمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٤ ص ١٠٦ حدیث ٥٣٦٦)

सर्दी में वुजू करने की हिफ़ायत

उज़रते उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने गुलाम, हुमरान से वुजू के लिये पानी मांगा और सर्दी की रात में बाहर जाना याहते थे हुमरान कहते हैं : मैं पानी लाया, उन्हों ने मुंह हाथ धोअे तो मैं ने कहा : अल्लाह आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है. ईस पर इरमाया के : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है के “जो बन्दा वुजूअे कामिल करता है अल्लाह तआला उस के अगले पिछले गुनाह बप्श देता है.”

(مسند بزار ج ٢ ص ٧٥ حدیث ٤٢٢)

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ اللَّهِ وَسَلَّمَ : जो मुँह पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शक़ाअत कड़ेगा। (क़ुरआन)

वुजू का तरीका (ह-नई)

का'बतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुँह कर के ठीकी जगह बैठना मुस्तहब है. वुजू के लिये नित्यत करना सुन्नत है, नित्यत न हो तब भी वुजू हो ज़ाअगा मगर सवाब नहीं मिलेगा. नित्यत दिल् के धरद के को कहते हैं, दिल् में नित्यत होते हुअे ज़बान से भी कह लेना अज़्जल है लिहाज़ा ज़बान से धस तरह नित्यत कीजिये के में हुकुमे धलाही **بِسْمِ اللَّهِ** कह लीजिये के येह भी सुन्नत है. बल्के **اللَّهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ** कह लीजिये के जब तक बा वुजू रहेंगे क़िरिश्ते नेकियां लिपते रहेंगे.¹ अब दोनों हाथ तीन तीन बार पधोंयों तक धोईये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उँगलियों का पिलाल भी कीजिये. कम अज़ कम तीन तीन बार दाअें बाअें ओपर नीये के दांतों में भिस्वाक कीजिये और हर बार भिस्वाक को धो लीजिये. हुज्जतुल धस्लाम हज़रते सय्यिदुना धमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** इरमाते हैं : “भिस्वाक करते वक्त नमाज़ में कुरआने मज्जद की किराअत और जिकुल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** के लिये मुँह पाक करने की नित्यत करनी चाहिये.”² अब सीधे हाथ के तीन युल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) धस तरह तीन कुद्लियां कीजिये के हर बार मुँह के हर पुर्जे पर (हल्क के कनारे तक) पानी बह ज़ाअे, अगर रोज़ा न हो तो गर-गरा भी कर लीजिये. क़िर सीधे ही हाथ के तीन युल्लू (अब हर बार आधा युल्लू पानी काई है) से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोशत तक पानी यढाईये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जउ तक पानी पधोंयाईये, अब (नल

करमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल)

बन्द कर के) उलटे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराभों में डालिये. तीन बार सारा येहरा इस तरह धोईये के जहां से आदतन सर के बाल उगना शुरूअ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और अक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाओ. अगर दाढ़ी है और अहराम बांधे हुओ नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बाद) इस तरह बिलाल कीजिये के उंगलियों को गले की तरफ़ से दाबिल कर के सामने की तरफ़ निकालिये फिर पहले सीधा हाथ उंगलियों के सिरे से धोना शुरूअ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोईये. इसी तरह फिर उलटा हाथ धो लीजिये. दोनों हाथ आधे आजू तक धोना मुस्तकब है. अक्सर लोग युद्लू में पानी ले कर पछोंये से तीन बार छोड देते हैं के कोहनी तक बहता यला जाता है इस तरह करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पछोंयने का अन्देशा है लिहाजा बयान कर्दा तरीके पर हाथ धोईये. अब युद्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की हाजत नहीं बल्के (बिगैर एजाजते सहीदा अैसा करना) येह पानी का इसराफ़ है. अब (नल बन्द कर के) सर का मस्ह इस तरह कीजिये के दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे अक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या भाल पर रभ कर भींयते हुओ गुद्दी तक इस तरह ले जाईये के हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां भींयते हुओ पेशानी तक ले आईये,¹ कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिदकुल मस नहीं डोने

1 : सर पर मस्ह का अक तरीका येह भी तहरीर है इस में बिल खुसूस ईस्लामी बहनों के लिये जियादा आसानी है युनान्चे लिभा है : मस्हे सर में अदाओ सुन्नत को येह भी कर्नी है के उंगलियां सर के अगले हिस्से पर रभे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक भींयता ले जाओ. (इतावा र-जविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 621)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : تُمَّ جَلَا بِي لَو مِوَجَّ پَر دُرْدَ پَدَو كَ تُمْبَارَا دُرْدَ مِوَجَّ تَكَّ
 پَدَوَيَتَا هَ. (طَرَبِي)

याहिएं, फिर कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सत्ह का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत्ह का मस्ह कीजिये और छुंगलियां (या'नी छोटी उंगलियां) कानों के सूराभों में दाबिल कीजिये और उंगलियों की पुशत से गरदन के पिछले हिस्से का मस्ह कीजिये. भा'ज लोग गले का और धुले हुअे हाथों की कोहनियों और क्लार्थियों का मस्ह करते हैं येह सुन्नत नहीं है. सर का मस्ह करने से कबल टोंटी अख्शी तरह बन्द करने की आदत बना लीजिये बिला वजह नल भुला छोड देना या अधूरा बन्द करना, के पानी टपक कर जाअेअ होता रहे ईसराफ व गुनाह है. पडले सीधा फिर उलटा पाँउ हर बार उंगलियों से शुद्ध कर के टप्नों के उपर तक बलके मुस्तहब है के आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये. दोनों पाँउ की उंगलियों का भिलाव करना सुन्नत है. (भिलाव के दौरान नल बन्द रभिये) ईस का मुस्तहब तरीका येह है के उलटे हाथ की छुंगलिया से सीधे पाँउ की छुंगलिया का भिलाव शुद्ध कर के अंगूठे पर अत्म कीजिये और उलटे ही हाथ की छुंगलिया से उलटे पाँउ के अंगूठे से शुद्ध कर के छुंगलिया पर अत्म कर लीजिये. (आम्मअे कुतुब)

दुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिहुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ફરમાते हैं : हर उजूव धोते वक्त येह उम्मीद करता रहे के मेरे ईस उजूव के गुनाह निकल रहे हैं.
 (احياء العلوم ج ١ ص ١٨٣ مُلَخَّصًا)

वुजू के बये हुअे पानी में 70 बीमारियों से शिफा

लोटे वगैरा से वुजू करने के भा'द बया हुवा पानी ખડे હો કર પીને મેં શિફા હૈ યુનાન્યે મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રજા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “ફતાવા

इरमाने मुस्तका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा हुइके पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रहुमतें नाजिल इरमाता है. (प्रां.)

र-उविय्या” मुभर्रज्ज जिल्द 4 सफ़हा 575 ता 576 पर इरमाते हैं :
 अकिय्या अे वुजू (या’नी वुजू के अये हुअे पानी) के लिये शरअन अ-उ-मतो
 अेडतिराम है और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित, के हुजूर ने
 वुजू इरमा कर अकिय्या आअ (या’नी अये हुअे पानी) को अडे डो कर नोश
 इरमाया और अेक हदीस में रिवायत किया गया के ईस का पीना सत्तर
 मरउ से शिफ़ा है. तो वोड ईन उमूर में आअे उमउम से मुशा-अहत
 रअता है अैसे पानी से ईस्तिन्ना मुनासिअ नईी. “तन्वीर” के आदाअे
 वुजू में है : “वुजू के आ’द वुजू का पसमान्दा (या’नी अया हुवा पानी)
 किअला रुअ अडे डो कर पिये.” अल्लामा अअदुल गनी नाअुलुसी
 इरमाते हैं : मैं ने तजरिआ किया है के जब मैं बीमार
 डोता हूँ तो वुजू के अकिय्या पानी से शिफ़ा हासिल डो जाती है. नअिये
 सादिक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ईस सडीड तिअे न-अवी में पाअे जाने
 वाले ईशदि गिरामी पर अे’तिमाद करते हुअे मैं ने येड तरीका ईप्तिचार
 किया है.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जन्नत के आठों दरवाअे अुल अते हैं

हदीसे पाक में है : जिस ने अखी तरड वुजू किया और इर
 आस्मान की तरइ निगाड उठाई और कलिअ अे शहादत पढा उस के
 लिये जन्नत के आठों दरवाअे अोल दिये अते हैं जिस से याडे अन्दर
 दाअिल डो.

(सुन्न दारमी ज १ व १११ हदित १११)

नजर कभी कमअोर न डे

अे वुजू के आ’द आस्मान की तरइ देअ कर सूअे अे
 पड लिया करे إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उस की नजर कभी कमअोर न डोगी.

(मसाईलुल कुरआन, स. 291)

કરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर्रद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिभूषण)

વુઝૂ કે બા'દ ત્રીન બાર સૂરએ કદ્ર પઢને કે ફઝાઇલ

હદીસે મુબારક મેં હૈ : જો વુઝૂ કે બા'દ એક મર્તબા સૂ-રતુલ કદ્ર પઢે તો વોહ સિદ્દીકીન મેં સે હૈ ઓર જો દો મર્તબા પઢે તો શુ-હદા મેં શુમાર ક્રિયા જાએ ઓર જો ત્રીન મર્તબા પઢેગા તો અલ્લાહ عزَّ وَّجَلَّ મૈદાને મહશર મેં ઉસે અપને અમ્બિયા કે સાથ રખેગા.

(کُنُزُ الْفُتَال ج ۹ ص ۱۳۲ رقم ۸۰-۲۶، الحاوی للفتاوی للسیوطی ج ۱ ص ۴۰۲)

વુઝૂ કે બા'દ પઢને કી દુઆ (અવ્વલ વ આખિર દુરુદ શરીફ)

જો વુઝૂ કરને કે બા'દ યેહ કલિમાત પઢે :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تરજમા : ઐ અલ્લાહ ! તૂ પાક હૈ ઓર તેરે લિયે
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، હી તમામ ખૂબિયાં હૈં મેં ગવાહી દેતા હું કે તેરે
أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ- સિવા કોઈ મા'બૂદ નહીં, મેં તુજ સે બખ્શિશ ચાહતા
હું ઓર તેરી બારગાહ મેં તૌબા કરતા હું.

તો ઉસ પર મોહર લગા કર અર્શ કે નીચે રખ દિયા જાએગા ઓર ક્રિયામત કે દિન ઉસ પઢને વાલે કો દે દિયા જાએગા. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۲۱ رقم ۲۷۰۴)

વુઝૂ કે બા'દ યેહ દુઆ બી પઢ લીજિયે (અવ્વલ વ આખિર દુરુદ શરીફ)

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ تરજમા : ઐ અલ્લાહ ! મુઝે કસરત
وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ- સે તૌબા કરને વાલોં મેં બના દે ઓર મુઝે
પાકીઝા રહને વાલોં મેં શામિલ કર દે.
(ترمذی ج ۱ ص ۱۲۱ حدیث ۵۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

इरमाने मुस्तङ्ग। عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर हुइदे पाक न पढे. (म.)

लङ्ग “अल्लाह” के यार हुइइ की निस्बत से वुजू के यार इराधत

❁ येहरा धोना ❁ कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना ❁ यौथाई सर का मस्ह करना ❁ टप्नों समेत दोनों पाँउ धोना.

(عَالَمِغِيرَى ج (ص २६८), अहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

धोने की ता'रीफ़

किसी उज्व धोने के येह मा'ना हैं के उस उज्व के हर हिस्से पर कम अज कम दो कतरे पानी बह जाये. सिई लीग जाने या पानी को तेल की तरह युपउ लेने या अेक कतरा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस तरह वुजू या गुस्ल अदा होगा.

(इतावा र-अविय्या मुअर्रजा, जि. 1, स. 218, अहारे शरीअत, जि. 1, स. 288)

“करम या रब्बल आ-लमीन” के यौदह हुइइ की निस्बत से वुजू की 14 सुन्नतें

“वुजू का तरीका” (उ-नई) में आ'उ सुन्नतों और मुस्तहब्बात का बयान हो युका है इस की मजीद वजाहत मुला-हजा इरमाईये :

❁ निथ्यत करना ❁ بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ पढना. अगर वुजू से कबल بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ कह लें तो जब तक आ वुजू रहेंगे इरिशते नेकियां लिअते रहेंगे ❁ दोनों हाथ पड़ोंयों तक तीन बार धोना ❁ तीन बार भिस्वाक करना ❁ तीन युल्लू से तीन बार कुल्ली करना ❁ रोजा न हो तो गर-गरा करना ❁ तीन युल्लू से तीन बार नाक में पानी यढाना ❁ दाढी हो तो (अहराम में न होने की सूरत में) उस का षिलाल करना ❁ हाथ और

करमाने मुस्तफ़ा. على الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क्रमाल)

✽ पाँउ की उँग्लियों का ज़िलाव करना ✽ पूरे सर का अेक ही बार मस्ह करना ✽ कानों का मस्ह करना ✽ इराँउ में तरतीब काँठम रचना (या'नी इर्ज़ आ'जा में पडले मुँह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना, फिर सर का मस्ह करना और फिर पाँउ धोना) और ✽ पै दूर पै वुजू करना या'नी अेक उजूव सूंभने न पाअे, के दूसरा उजूव धो लेना.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 294 मुलज्जसिन)

“या रसूलव्वाह तेरे दर की इआओं को सलाम” के उन्तीस हुइइ की निस्बत से वुजू के 29 मुस्तहब्बात

✽ डिब्बा इ ✽ उँची जगह ✽ बैठना ✽ पानी बहाते वक्त आ'जा पर हाथ डेरना ✽ इत्मीनान से वुजू करना ✽ आ'जाअे वुजू पर पडले पानी युपड लेना जुसूसन सदिियों में ✽ वुजू करने में बिगैर जइरत किसी से मदद न लेना ✽ सीधे हाथ से कुल्ली करना ✽ सीधे हाथ से नाक में पानी यढाना ✽ उलटे हाथ से नाक साइ करना ✽ उलटे हाथ की छुँग्लिया नाक में डालना ✽ उँग्लियों की पुशत से गरदन की पुशत का मस्ह करना ✽ कानों का मस्ह करते वक्त भीगी हुई छुँग्लिया (या'नी छोटी उँग्लियां) कानों के सूराभों में दाजिल करना ✽ अंगूठी को ह-र-कत देना जब के ढीली हो और येह यकीन हो के ईस के नीचे पानी बह गया है, अगर सप्त हो तो ह-र-कत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना इर्ज़ है ✽ मा'जूरे शर-ई (ईस के तइसीवी अहकाम ईसी रिसाले के सइहा 32 ता 35 पर मुला-हजा इरमा लीजिये) न हो तो नमाज का वक्त शुइअ

करमाने मुस्तफ़اً صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुजू पर दुरुद शरीफ़ पढे अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुसूद)

होने से पहले ही वुजू कर लेना ❀ जो कामिल तौर पर वुजू करता है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की तरफ़ आंभों के दानों कोने) टप्नों, अंडियों, तल्वों, कूंयों (या'नी अंडियों के ठीपर मोटे पकड़े) घाईयों (या'नी उंग्लियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का भुसूसिख्यत के साथ भयाल रहना और बे भयाली करने वालों के लिये तो इर्ज़ है के इन जगहों का भास भयाल रहने के अकसर देभा गया है के येह जगहें भुशक रह जाती हैं और येह बे भयाली ही का नतीजा है औसी बे भयाली हुराम है और भयाल रहना इर्ज़ ❀ वुजू का लोटा उलटी तरफ़ रहिये अगर तशत या पतीली वगैरा से वुजू करें तो सीधी जानिब रहिये ❀ येहरा धोते वक्त पेशानी पर इस तरह झैला कर पानी डालना के ठीपर का कुछ छिस्सा भी धुल जाअे ❀ येहरे और ❀ हाथ पाँउ की रोशनी वसीअ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना इर्ज़ है उस के अतराफ़ में कुछ बढाना म-सलन हाथ कोहनी से ठीपर आधे भाजू तक और पाँउ टप्नों से ठीपर आधी पिंडली तक धोना ❀ दानों हाथों से मुंड धोना ❀ हाथ पाँउ धोने में उंग्लियों से शुअ करना ❀ हर उजूव धोने के आ'द उस पर हाथ डैर कर भूँदें टपका देना ताके बदन या कपडे पर न टपके भुसूसन जब के मस्जिद में जाना हो, के इर्शे मस्जिद पर वुजू के पानी के कतरे गिराना मक़ूदे तहरीमी है ❀ हर उजूव के धोते वक्त और मस्ह करते वक्त निख्यते वुजू का हाजिर रहना ❀ ईब्लिदा में ﷻ के साथ साथ दुरुद शरीफ़ और कलिमअे शहादत पढ लेना ❀ आ'जाअे वुजू भिला ज़रत

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقْبِلَ رِجْلَيْهِ﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे शुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (मिम्ने)

न पोंछिये अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल पुशक न कीजिये कुछ तरी बाकी रभिये के बरोजे कियामत नेकियों के पलडे में रभी जाओगी ❀ वुजू के बा'द हाथ न जटकें के शैतान का पंभा है ❀ बा'दे वुजू मियानी (या'नी पाजमे का वोड हिस्सा जो पेशाब गाल के करीब होता है) पर पानी छिउकना. (पानी छिउकते वक्त मियानी को कुरते के दामन में छुपाओ रभना मुनासिब है नीज वुजू करते वक्त भी बल्के हर वक्त परें में पर्दा करते हुओ मियानी को कुरते के दामन या थादर वगैरा के जरीओ छुपाओ रभना हया के करीब है) ❀ अगर मक़रुह वक्त न हो तो दो रक़अत नफ़ल अदा करना जिसे तहिय्यतुल वुजू कहते हैं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 293, 300)

“काश ! कामिल वुजू नसीब हो” के सोलह दुइइ की निस्बत से वुजू के 16 मक़रुहत

❀ वुजू के लिये नापाक जगह पर बैठना ❀ नापाक जगह वुजू का पानी गिराना ❀ आ'जओ वुजू से लोटे वगैरा में कतरे टपकाना (मुंह धोते वक्त लरे हुओ युल्लू में उमूमन येहरे से पानी के कतरे गिरते हैं इस का ખयाल रभिये) ❀ किन्ले की तरफ़ थूक या बलगम डालना या कुल्ली करना ❀ बे ज़रूरत हुन्या की बात करना ❀ ज़ियादा पानी ખर्य करना (सदरुशशरीअह मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) बहारे शरीअत मुभर्रज जिल्द अक्वल सफ़हा 302 ता 303 पर इरमाते हैं : नाक में पानी डालते वक्त आधा युल्लू काई है तो अब पूरा युल्लू लेना इसराइ है) ❀ एतना कम पानी ખर्य करना के सुन्नत अदा न हो (टोंटी न एतनी ज़ियादा ખोलें के पानी हाजत से ज़ियादा गिरे न एतनी कम ખोलें के सुन्नत भी

करमाने मुस्तक़ा غسل اللّٰه تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : जो मुज़ पर अक दुइद शरीक़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज़ लिखता है और कीरात उहुद पढाउ जितना है. (ज़िज़्ज़ा)

अदा न हो बल्के मु-तवस्सित हो) ❀ मुंह पर पानी मारना ❀ मुंह पर पानी डालते वक्त झूंकना ❀ अक हाथ से मुंह धोना के रिफ़ाउ व हुनूद का शिआर है ❀ गले का मस्ह करना ❀ उलटे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी बढाना ❀ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ❀ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मस्ह करना ❀ धूप के गर्म पानी से वुजू करना ❀ डोंट या आंभें जोर से बन्द करना और अगर कुछ सूषा रह गया तो वुजू ही न होगा. वुजू की हर सुन्नत का तर्क मक़रूह है ईसी तरह हर मक़रूह का तर्क सुन्नत. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 300, 301)

धूप के गर्म पानी की वज़ाहत

सदरुशशरीअह, बहररुतरीक़ हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत मुभर्रज़ा जिल्द अक्वल सफ़हा 301 के हाशिये पर लिखते हैं : “जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुजू करना मुत्लकन मक़रूह नहीं बल्के ईस में यन्द कुयूद हैं, जिन का ज़िक़ पानी के बाब में आयेगा और ईस से वुजू की कराहत तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं.” पानी के बाब में सफ़हा 334 पर लिखते हैं : “जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने यांटी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुजू और गुस्ल न खाहिये, न उस को पीना खाहिये बल्के बदन को किसी तरह पछोयना न खाहिये, यहां तक के अगर उस से कपडा लीग जाये तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बयें के उस पानी के ईस्ति'माल में अन्देशाये

इरमाने मुस्तका عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये इस्तिस्कार करते रहेंगे. (ज. 1)

भरस (या'नी बदन पर सफेद दाग का अन्देशा) है, फिर भी अगर वुजू या गुस्ल कर लिया तो हो जायेगा.” (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 301, 334)

मुस्ता'मल पानी का अहम मसाला

अगर बे वुजू शप्स का हाथ या उंगली का पोरु या नाभुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुजू में धोया जाता हो जलन भूज कर या तूल कर दह दर दह (10x10) से कम पानी (म-सलन पानी से भरी छुई बालटी या लोटे वगैरा) में पड जाये तो पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुद्ध) हो गया और अब वुजू और गुस्ल के लाईक न रहा. ईसी तरह जिस पर गुस्ल ईर्ज हो उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा हिस्सा पानी से धू जाये तो वोह पानी वुजू और गुस्ल के काम का न रहा. हां अगर धुला हाथ या धुले हुये बदन का कोई हिस्सा पड जाये तो हरज नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 333) (मुस्ता'मल पानी और वुजू व गुस्ल के तफ्सीली अहकाम सीखने के लिये बहारे शरीअत हिस्सा 2 का मुता-लआ इरमाईये)

मिट्टी मिले पानी से वुजू होगा या नहीं

❁ पानी में रैत कीयड मिल जाये तो जब तक रकीक (या'नी पानी पतला) रहे उस से वुजू जाईज है. अकूल (आ'ला उररत عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) इरमाते हैं: “में कहता हूं”) मगर बिला उररत कीयड मिले हुये (पानी) से वुजू करना मन्अ है, के मुस्ला या'नी सूरत बिगाडना है और येह शर-अन हुराम है (इतावा र-जविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 650) (मा'लूम हुवा मुंह पर ईस तरह मिट्टी मलना के सूरत बिगड जाये या मुंह काला करना जैसा

ફરમાને मुस्तફा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अके बार दुइडे पाक पढा अदलाह उस पर दस रइभते बेजता है. (स्म)

के बा'ज अवकात योर का कोअेले वगैरा से मुंड काला कर देते हैं येह हराम है कस्दन काफ़िर का भी मुस्ला करना या'नी येहरा बिगाडना ज़ाईज नहीं) ❁ जिस पानी में कोई बढबूदार चीज़ मिल जाअे उस से वुजू मक़रूह है पुसूसन अगर उस की बढबू नमाज़ में बाकी रहे, के (ईस से नमाज़) मक़रूहे तहरीमी होगी. (अैज़न, स. 650)

पान पाने वाले मु-तवज्जेह हों

मेरे आका आ'ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल अ-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानअे शम्मे रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माडिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे भैरो अ-र-कत, हज़रते अद्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह ईमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आदी पुसूसन जब के दांतों में फ़जा (गेप) हो तज़रिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेजे और पान के बहुत छोटे छोटे टुकडे ईस तरह मुंड के अतराफ़ व अकनाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंड के कोनों और दांतों के पांयों में घुस जाते हैं) के तीन बल्के कभी दस बारह कुद्लियां भी उन के तस्फ़ियअे ताम (या'नी मुकम्मल सज़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न पिलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुद्लियों के, के पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराभों) में दाभिल होता और ज़ुम्बिशें देने (या'नी डिलाने) से जमे हुअे बारीक ज़रों को अ तदरीज छुडा छुडा कर लाता है, ईस की भी कोई तहदीद (हद बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सज़ाई) भी बहुत

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَدْفِئًا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्तत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

मुअक्कद (या'नी ँस की सप्त ताकीद) है मु-तअदद अहादीस में ँशदद हुवा है के : “जब बन्दा नमाज को षडा ढोता है क्कुरिश्ता उस के मुंड पर अपना मुंड रषता है येह जो पढता है ँस के मुंड से निकल कर क्कुरिश्ते के मुंड में जाता है उस वक्त अगर षाने की कोई शै उस के दान्तों में ढोती है मलाअेका को उस से अैसी सप्त ँजा ढोती है के और शै से नहीं ढोती.”

दुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने क्कुरमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज के लिये षडा ढो तो याहिये के मिस्वाक कर ले क्यूंके जब वोह अपनी नमाज में क्कुराअत करता है तो क्कुरिश्ता अपना मुंड ँस के मुंड पर रष लेता है और जो यीज ँस के मुंड से निकलती है वोह क्कुरिश्ते के मुंड में दामिल ढो जाती है.¹ और “त-बरानी ने क्कुरीर” में ढजरते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की है के दानों क्कुरिश्तों पर ँस से जियादा कोई यीज गिरां नहीं के वोह अपने साथी को नमाज पढता देभें और उस के दान्तों में षाने के रेजे ँसे ढों.

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٤ ص ١٧٧ حديث ٤٠٦١) , इतावा र-जविय्या मुषर्रजा, जि. 1, स. 624, 625)

तसव्वुर का अमीम म-दनी नुस्खा

दुजुजतुल ँस्लाम ढजरते सय्यिदुना ँमाम अबू ढामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي क्कुरमाते हैं : वुजू से क्कुरागत के बा'द जब आप नमाज की तरफ़ मु-तवज्जेह ढों उस वक्त येह तसव्वुर कीजिये के जिन जाहिरि आ'जा पर लोगों की

مدینہ
ل شَعْبِ الْإِيمَان ج ٢ ص ٣٨١ رقم ٢١١٧

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبِلَ أَيْمَانِهِ وَسَلَّمَ﴾: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुह पाक न पढा तबकीक वोह बढ अप्त हो गया. (उंन)

नजर पडती है वोह तो ब आहिर ताहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर हिल को पाक किये बिगैर बारगाहे एलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाज्जत करना हया के खिलाफ है क्यूंके अस्लाह عَزَّوَجَلَّ हिलों को भी देपने वाला है. मजीह इरमाते हैं : आहिरि वुजू कर लेने वाले को येह बात याद रपनी याहिये के हिल की तहारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोडने और उम्हा अप्लाक अपनाने से डोती है. जो शप्स हिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता इकत आहिरि तहारत (या'नी सफ़ाई) और जैबो जीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शप्स की सी है जो बादशाह को मद्दुि करता है और अपने घर को बाहर से भूब यमकाता है और रंगो रोगन करता है मगर मकान के अन्दरनी हिस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता. अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देभेगा तो वोह नाराज डोगा या राजी येह डर जी शुडिर भुद समज सकता है.

(أَحْيَاءُ الْقُلُومِ ج 1 ص 180 مَخْصَصًا)

“सफ़ा कर” के पांय हुरइ की निस्बत से

मम्म वगैरा से भून निकलने के 5 अहकाम

❁ भून, पीप या जर्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पड़ोयने की सलाहियत थी जिस जगह का वुजू या गुस्ल में धोना इर्ज है तो वुजू जाता रहा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 304)

❁ भून अगर यमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या याकू का कनारा लग जाता है और भून उभर या यमक जाता है या

करमाने मुस्तका عَنِ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहुमतें भेजता है. (स्म)

ખિલાલ ક્રિયા યા મિસ્વાક કી યા ઉંગલી સે દાંત માંજે યા દાંત સે કોઈ ચીઝ મ-સલન સેબ વગૈરા કાટા ઉસ પર ખૂન કા અસર ઝાહિર હુવા યા નાક મેં ઉંગલી ડાલી ઈસ પર ખૂન કી સુખી આ ગઈ મગર વોહ ખૂન બહને કે કાબિલ ન થા વુજૂ નહીં ટૂટા. (ઐઝન) ❁ અગર બહા મગર બહ કર ઐસી જગહ નહીં આયા જિસ કા ગુસ્લ યા વુજૂ મેં ધોના ફર્જ હો મ-સલન આંખ મેં દાના થા ઔર ટૂટ કર અન્દર હી ફૈલ ગયા બાહર નહીં નિકલા યા પીપ યા ખૂન કાન કે સૂરાખોં કે અન્દર હી રહા બાહર ન નિકલા તો ઈન સૂરતોં મેં વુજૂ ન ટૂટા (ઐઝન, સ. 27) ❁ ઝખ્મ બેશક બડા હૈ રતૂબત ચમક રહી હૈ મગર જબ તક બહેગી નહીં વુજૂ નહીં ટૂટેગા. (ઐઝન) ❁ ઝખ્મ કા ખૂન બાર બાર પોંછતે રહે, કે બહને કી નૌબત ન આઈ તો ગૌર કર લીજિયે કે અગર ઈતના ખૂન પોંછ લિયા હૈ કે અગર ન પોંછતે તો બહ જાતા તો વુજૂ ટૂટ ગયા, નહીં તો નહીં. (ઐઝન)

સર્દી સે આ'ઝા ફટ જાએ તો.....

સર્દી વગૈરા સે આ'ઝા ફટ ગએ ધો સકે ધોએ, ઠન્ડા પાની નુક્સાન કરે તો ગર્મ પાની અગર કર સકતા હો કરના વાજિબ, અગર ગર્મ સે ભી નુક્સાન હો તો મસ્હ કરે, અગર મસ્હ ભી નુક્સાન દે તો ઉસ પર જો પટ્ટી બંધી યા દવા કા ઝિમાદ (યા'ની લેપ) હૈ ઉસ પર પાની બહાએ, યેહ ભી ઝરર (યા'ની નુક્સાન) દે તો ઉસ પટ્ટી યા ઝિમાદ (યા'ની લેપ, PESTE) પૂરે પર મસ્હ કરે ઈસ સે (ભી) નુક્સાન હો તો છોડ દે, મુઆફ હૈ. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 4, સ. 620)

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખિરૂતી)

વુઝૂ મેં મેહંદી ઓર સુરમે કા મસ્અલા

❁ ઓરત કે હાથ પાઉં પર મેહંદી કા જિર્મ લગા રહ ગયા ઓર ખબર ન હુઈ તો વુઝૂ વ ગુસ્લ હો જાએગા. હાં જબ ઇતિલાઅ હો છુડા કર વહાં પાની બહા દે. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 4, સ. 613)

❁ સુરમા આંખ કે કૂએ (યા'ની આંખ કે કોને) યા પલક મેં રહ ગયા ઓર ઇતિલાઅ ન હુઈ ઝાહિરન હરજ નહીં ઓર બા'દે નમાઝ કૂએ (આંખ કે કોને) મેં મહસૂસ હુવા તો અસ્લન બાક (યા'ની બિલ્કુલ અન્દેશા) નહીં. (મતલબ યેહ કે નમાઝ હો ગઈ) (એઝન)

ઇન્જેક્શન લગાને સે વુઝૂ ટૂટેગા યા નહીં ?

❁ ગોશત મેં ઇન્જેક્શન લગાને મેં સિર્ફ ઇસી સૂરત મેં વુઝૂ ટૂટેગા જબ કે બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નિકલે ❁ જબ કે નસ કા ઇન્જેક્શન લગા કર પહલે ખૂન ઊપર કી તરફ ખીંચતે હૈં જો કે બહને કી મિકદાર મેં હોતા હૈ લિહાઝા વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ ❁ ઇસી તરહ ગ્લૂકોઝ વગૈરા કી ડ્રિપ નસ મેં લગવાને સે વુઝૂ ટૂટ જાએગા ક્યૂંકે બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નિકલ કર નલકી મેં આ જાતા હૈ. હાં બહને કી મિકદાર મેં ખૂન નલકી મેં ન આએ તો વુઝૂ નહીં ટૂટેગા ❁ સિરિંજ કે ઝરીએ ટેસ્ટ કરને કે લિયે ખૂન નિકાલને સે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ ક્યૂંકે યેહ બહને કી મિકદાર મેં હોતા હૈ ઇસી લિયે યેહ ખૂન પેશાબ કી તરહ નાપાક ભી હોતા હૈ, ખૂન સે ભરી હુઈ શીશી જેબ મેં રખ કર નમાઝ પઢી, ન હુઈ નીઝ ખૂન યા પેશાબ કી શીશી અગર્યે અચ્છી તરહ બન્દ હો મસ્જિદ કે અન્દર ભી નહીં લા સકતે, લાએંગે તો ગુનહગાર હોંગે.

करमाने मुस्तफ़اً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुददे पाक न पढा तबकीक
 वोह बट् अफ्त हो गया. (हदीस)

दुपती आंभ के आंसू

❁ आंभ की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुजू भी तोड़ देगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) अफ़सोस ! अक्सर लोग इस मस्अले से ना वाकिफ़ होते हैं और दुपती आंभ से ब वजहे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समज़ कर आस्तीन या कुरते के दामन वगैरा से पोंछ कर कपडे नापाक कर डालते हैं

❁ नाबीना की आंभ से जो रतूबत ब वजहे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और इस से वुजू भी टूट जाता है.

(माभूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 306)

पाक और नापाक रतूबत

❁ जो रतूबत इन्सान्नी बदन से निकले और वुजू न तोडे वोह नापाक नहीं. म-सलन भून या पीप बह कर न निकले या थोडी के, के मुंह भर न हो पाक है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

छाला और कुडिया

❁ छाला नोय डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुजू टूट गया वरना नहीं. (अज़न, स. 305) ❁ कुडिया बिडकुल अख़ी हो गइ उस की मुर्दा भाल बाकी है जिस में उपर मुंह और अन्दर भला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुजू जाअे न वोह पानी नापाक. हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी भून वगैरा की बाकी है तो वुजू भी जाता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है. (इतावा र-जविय्या मुभर्रज, जि. 1, स. 355, 356) ❁ पारिश या कुडियों में अगर बहने वाली रतूबत न हो सिर्फ़ यिपक हो और कपडा उस से बार

﴿۞﴾ इरमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुब्ह और दस भरतबा शाम दुइद पाक पढा, उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अल-मुवज़) (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी.)

बार छू कर याहे कितना ही सन जाये पाक है. (बहार शरीअत, जि. 1, स. 310) ﴿۞﴾ नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा भून निकला वुजू न टूटा, अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येह है के वुजू करे.

(इतावा २-अविथ्या मुभर्रज, जि. 1, स. 281)

कै से वुजू कब टूटता है ?

﴿۞﴾ मुंड भर कै जाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग का कडवा पानी) की वुजू तोड देती है. जो कै तकल्लुफ़ के बिगैर न रोक़ी जा सके उसे मुंड भर कडते हैं. मुंड भर कै पेशाब की तरह नापाक छोती है इस के छींटों से अपने कपडे और बदन को बयाना ज़रूरी है.

(भाभूज अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 306, 390 वगैरा)

हंसने के अहकाम

﴿1﴾ रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग ने कड़कड़ा लगा दिया या'नी एतनी आवाज़ से हंसा के आस पास वालों ने सुना तो वुजू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर एतनी आवाज़ से हंसा के सिर्फ़ थुद सुना तो नमाज़ गई वुजू बाकी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाओगी न वुजू. मुस्कुराने में आवाज़ बिलकुल नहीं छोती सिर्फ़ दांत जाहिर छोते हैं (मराय़ी अल-फ़लाह स. १६) ﴿2﴾ बालिग ने नमाज़े जनाज़ा में कड़कड़ा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुजू बाकी है. (अय़ुख़) ﴿3﴾ नमाज़ के एलावा कड़कड़ा लगाने से वुजू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तहब है. (मराय़ी अल-फ़लाह स. १०) हमारै भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी कड़कड़ा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी याहिये के येह सुन्नत भी जिन्दा हो और हम जोर जोर से न हंसें. इरमाने

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मुस्तफ़ा या 'नी الْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمِ مِنَ اللّٰهِ تَعَالَى : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कड़कड़ा शैतान की तरफ़ से है और मुस्कुराना अद्लाह وَحَلَّ وَجَلَّ की तरफ़ से है.

(الْمَغْزَمُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٢ ص ١٠٤)

क्या सत्र टूटने से वुजू टूट जाता है ?

अवाम में मशहूर है के घुटना या सत्र फुलने या अपना या पराया सत्र टूटने से वुजू टूट जाता है येह बिदकुल गलत है. हां वुजू के आदाब से है के नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत सब सत्र छुपा हो बल्के इस्तिन्जा के भा'द झौरन ही छुपा लेना याहिये के बिगैर ज़रत सत्र फुला रहना मन्अ और दूसरों के सामने सत्र फोलना हराम है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 309)

गुस्ल का वुजू काड़ी है

गुस्ल के लिये जो वुजू किया था वोही काड़ी है ज्वाह बरहना नहायें. अब गुस्ल के भा'द दोबारा वुजू करना ज़रूरी नहीं बल्के अगर वुजू न ली किया हो तो गुस्ल कर लेने से आ'जाअे वुजू पर ली पानी बह जाता है लिहाजा वुजू ली हो गया, कपडे तब्दील करने से ली वुजू नहीं जाता.

थूक में पून

﴿1﴾ मुंह से पून निकला अगर थूक पर गालिब है तो वुजू टूट जायेगा वरना नहीं, ग-लबे की शनाप्त येह है के अगर थूक का रंग सुर्भ हो जाये तो पून गालिब समजा जायेगा और वुजू टूट जायेगा येह सुर्भ थूक नापाक ली है. अगर थूक जर्द (या'नी पीला) हो तो पून पर थूक गालिब माना जायेगा लिहाजा न वुजू टूटेगा न येह जर्द थूक नापाक.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 305)

﴿۲﴾ **करमाने मुस्तकी** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में कियामत के दिन उस की शकाअत कड़ेगा. (अत्राल)

﴿2﴾ मुंड से ँतना भून निकला के थूक सुर्भ ढो गया और लोटे या गिलास से मुंड लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस ढो गया लिहाजा जैसे भौकअ पर युल्लू में पानी ले कर अहतियात से कुल्ली कीजिये और ये ल भी अहतियात इरमांये के छींटे उड कर आप के कपडों वगैरा पर न पडें.

वुजू में शक आने के 5 अहकाम

✽ अगर दौराने वुजू किसी उज्व के धोने में शक वाकेअ ढो और अगर ये ल जिन्दगी का पडला वाकिआ है तो ँस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक पडा करता है तो ँस की तरफ तवज्जोह न दीजिये. ँसी तरल अगर बा'दे वुजू भी शक पडे तो ँस का कुछ भयाल मत कीजिये. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 310) ✽ आप भा वुजू थे अब शक आने लगा के पता नही वुजू है या नही, ऐसी सूरत में आप भा वुजू हें क्यूंके सिर्फ शक से वुजू नही टूटता. (अज्ज, स. 311) ✽ वस्वसे की सूरत में अहतियातन वुजू करना अहतियात नही ँत्तिआअे शैतान है (अज्ज) ✽ यकीनन आप उस वक्त तक भा वुजू हें जब तक वुजू टूटने का ऐसा यकीन न ढो जाअे के कसम भा सकें ✽ कों उज्व धोने से रह गया है मगर ये ल याद नही कौन सा उज्व था तो आयां (या'नी उलटा) पाउ धो लीजिये. (इर्रुख्तार १ ص ३१)

सोने से वुजू टूटने न टूटने का बयान

नींद से वुजू टूटने की दो शर्ते हें : ﴿1﴾ दोनों सुरीन अख्शी तरल जमे हुअे न ढों ﴿2﴾ ऐसी ढालत पर सोया जो गाडिल ढो कर सोने में रुकावट न ढो. जब दोनों शर्ते जम्अ ढों या'नी सुरीन भी अख्शी तरल

करमाने मुस्तका : صلى الله تعالى عليهم و آله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरेद पाक पढा अल्लाह उस पर सो
रहमते नाजिल करमाता है. (प्रां.)

जैसे जुनून (या'नी पागल पन) या नमाज में कड़कड़ा गशी (या'नी बेहोशी) भी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जिस्मे जाहिर पर तारी हो सकती है, दिल मुबारक इस हालत में भी बेदार व ખબरदार रहता.

(इतावा २-अविय्या मुभर्रज, जि. 4, स. 740)

मसाजिद के वुजूबाने

मिस्वाक करने से बा'ज अवकात दांतों में भून आ जाता है और थूक भी सुर्ष होने की वजह से नापाक हो जाता है मगर अफ्सोस, के अहतियात नहीं की जाती. मसाजिद के वुजूबाने भी अक्सर कम गहरे होते हैं जिस की वजह से सुर्ष थूक वाली कुल्ली के छीटे कपड़ों या बदन पर पडते हैं, नीज घर के इम्माम के पुप्ता इर्श पर वुजू करते वक्त इस से भी जियादा छीटे पडते हैं.

घर में वुजूबाना बनवाघये

आज कल बेसीन (हाथ धोने की कूंडी) पर ञडे ञडे वुजू करने का रवाज है जो के भिलाई मुस्तहब है. अफ्सोस ! लोग असाइशों त्परी बडी बडी कोठियां तो बनाते हैं मगर इस में वुजूबाना नहीं बनवाते ! सुन्नतों का दद रपने वाले इस्लामी त्प्राइयों की भिदमतों में म-दनी इत्तिजा है के हो सके तो अपने मकान में कम अज कम अक टोंटी का वुजूबाना जइर बनवाइये. इस में येह अहतियात जइर रभिये के टोंटी की धार बराहे रास्त इर्श पर गिरने के अजाअे ढलवान पर गिरे वरना दांतों में भून वगैरा आने की सूरत में बदन या लिबास पर छीटे उडने का मस्अला रहेगा अगर आप मोहतात वुजूबाना बनवाना याहते हैं तो इसी रिसाले के पीछे दिये हुअे नकशे से रहनुमाई हासिल कीजिये.

ફરમાને મુસ્તકા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : اِس شَہَسْ کِی نَاک پَاک آلاؤد ھُو جِیس کَ پَاس مَرا لِک ھُو اُور وَاہ مُؤا پَر دُڑدَہ پَاک ن پَدَہ. (۴۷)

“યા રસૂલે ખુદા” કે નવ હુરૂફ કી નિસ્બત સે વુઝૂખાને કે 9 મ-દની ફૂલ

- ❶ મુસ્કિન હો તો ઈસી રિસાલે કે પીછે દિયે હુએ નકશે સે રહનુમાઈ હાસિલ કર કે અપને ઘર મેં વુઝૂખાના બનવાઈયે.
- ❷ (મિ'માર કે દલાઈલ સુને બિગૈર) દિયે હુએ નકશે કે મુતાબિક અને હુએ ઘરેલૂ વુઝૂખાને કે બાલાઈ (યા'ની પાઉ રખને વાલે) ફર્શ કી ઢલવાન (slope) દો ઈન્ય રખિયે.
- ❸ અગર એક સે ઝિયાદા નલ લગવાને હોં તો દો નલોં કે દરમિયાન 25 ઈન્ય કા ફાસિલા રખિયે.
- ❹ વુઝૂખાને કી ટોંટી મેં હસ્બે ઝરૂરત કપડા યા પ્લાસ્ટિક કી નિપલ લગા લીજિયે.
- ❺ અગર પાઈપ દીવાર કે બાહર સે લગવાએં તો નિશસ્ત ગાહ ઝરૂરતન એક યા દો ઈન્ય મઝીદ દૂર કર લીજિયે.
- ❻ બેહતર યેહ હૈ કે કચ્ચા કામ કરવા કર એકઆધ બાર ઉસ પર બૈઠ કર યા વુઝૂ કર કે અચ્છી તરહ દેખ લેને કે બા'દ પુખ્તા કરવાઈયે.
- ❼ વુઝૂખાને યા હમ્મામ વગૈરા કે ફર્શ પર ટાઈલ્સ લગવાને હોં તો ખુર-દરે (Slip Resistance Tiles) લગવાઈયે તાકે ફિસલને કા ખતરા કમ હો જાએ.
- ❽ પાઉ રખને કી જગહ કા સિરા (યા'ની કનારા) ઓર ઈસ કી ઢલાન કે કમ અઝ કમ દો દો ઈન્ય હિસ્સે પર ટાઈલ્સ ન હો બલકે વોહ હિસ્સા સીમેન્ટ સે ખુર-દરા ઓર ગોલ બનવાઈયે તાકે ઝરૂરતન પાઉ રગડ કર મૈલ છુડાયા જા સકે.

﴿۹﴾ **करमाने मुस्तफ़ा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَبِهِ رَسْمٌ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़रमल)

﴿9﴾ **बावर्यी** जाना, गुस्ल जाना, बैतुल जला का इर्श, जुला सेह्न, छत, मस्जिद का वुजूजाना और जहां जहां पानी बहाने की ज़रूरत पड़ती है उन मकामात के इर्श की ढलवान (slope) मि'मार जो बताओ उस से बिला जिजक डेढ गुना (म-सलन वोह दो इन्ध कहे तो आप तीन इन्ध) रजवाइये. मि'मार तो येही कहेगा के आप इक़ मत कीजिये अक़ कतरा भी पानी नहीं रुकेगा अगर आप उस की बातों में आ गओ तो हो सकता है ढलवान बराबर न बने लिहाजा उस की बात पर अ'तिमाद नहीं करेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस का फ़ाओदा आप जुद ही देज लेंगे क्यूंके मुशा-हदा येही है के अक्सर इर्श वगैरा पर जगह जगह पानी पडा रह जाता है.

जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये 6 अहकाम

﴿1﴾ **कतरा** आने, पीछे से रीह पारिज होने, जम्म बहने, दुपती आंघ से ब वजहे मरज आंसू बहने, कान, नाइ, पिस्तान से पानी निकलने, झोडे या नासूर से रतूबत बहने और दस्त आने से वुजू टूट जाता है. अगर किसी को इस तरह का मरज मुसव्सल जारी रहे और शुइअ से आभिर तक पूरा अक़ वक्त गुजर गया के वुजू के साथ नमाजे इर्ज अदा न कर सका वोह शर-अन मा'जूर है, अक़ वुजू से उस वक्त में जितनी नमाजें याहे पढे. इस का वुजू उस मरज से नहीं टूटेगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385, ००३ **رُدُّوا النَّحْتَارَ وَرُدُّوا النَّحْتَارَ**) इस मस्अले को मज़ीद आसान लइजों में समजाने की कोशिश करता हूं. इस किस्म के मरीज और मरीजा अपने मा'जूरे शर-ई होने न होने की ज़ांय इस तरह करें के कोई सी भी दो इर्ज नमाजों के दरमियानी वक्त में कोशिश करें के वुजू कर के तहारत के साथ कम अज कम इर्ज रकअतें अदा की जा सकें. पूरे वक्त के दौरान बार बार कोशिश के बा वुजूद अगर इतनी मोहलत

इरमाने मुस्तका : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर हुइद शरीफ पढे अल्लाह غَزْوَجَلُّ تُوْم पर रहमत भेजेगा. (अिन सदी)

नहीं मिल पाती, वोह ईस तरह, के कभी तो दौराने वुजू ही उजूर लाहिक हो जाता है और कभी वुजू मुकम्मल कर लेने के बाद नमाज अदा करते हुअे, उता के आभिरि वक्त आ गया तो अब उन्हें ईजाजत है के वुजू कर के नमाज अदा करें नमाज हो जायेगी, अब याहे दौराने अदाईगिये नमाज, बीमारी के बाईस नजासत बदन से पारिज ही क्यूं न हो रही हो. हु-कडाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام इरमाते हैं : किसी शप्स की नकसीर इट गई या उस का जम्म बह निकला तो वोह आभिरि वक्त का ईन्तिजार करे अगर पून मुन्कतअ न हो (बहके मुसल्लव या वक्के वक्के से जारी रहे) तो वक्त निकलने से पहले वुजू कर के नमाज अदा करे.

(الْبَحْرُ الرَّاقِع ۱ ج ۱ ص ۳۷۳-۳۷۴)

﴿2﴾ इर्ज नमाज का वक्त जाने से मा'जूर का वुजू टूट जाता है जैसे किसी ने अस्र के वक्त वुजू किया था तो सूरज गुर्ब होते ही वुजू जाता रहा और अगर किसी ने आइताब निकलने के बाद वुजू किया तो जब तक जोहर का वक्त अत्म न हो वुजू न जायेगा के अभी तक किसी इर्ज नमाज का वक्त नहीं गया. इर्ज नमाज का वक्त जाने ही मा'जूर का वुजू जाता रहता है और येह हुकम उस सूरत में होगा जब मा'जूर का उजूर दौराने वुजू या बाद वुजू जाहिर हो, अगर अैसा न हो और दूसरा कोई हदस (या'नी वुजू तोडने वाला मुआ-मला) भी लाहिक न हो तो इर्ज नमाज का वक्त जाने से वुजू नहीं टूटेगा.

(المختار، ردُّ الْمُحْتَار ۱ ج ۱ ص ०००, जि. 1, स. 386)

﴿3﴾ जब उजूर साबित हो गया तो जब तक नमाज के ओक पूरे वक्त में ओक बार भी वोह चीज पाई जाये मा'जूर ही रहेगा. म-सलन किसी को सारा वक्त कतरा आता रहा और ईतनी मोहलत ही न मिली के

﴿۴﴾ **करमाने मुस्तक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुइदुइ पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुइदुइ पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़ि़रत है. (मुस्तिज़ि़)

वुजू कर के इर्ज़ अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गया. अब दूसरे अवकात में र्तना मौक़अ मिल जाता है के वुजू कर के नमाज़ पढ ले मगर अक़आध दफ़आ कतरा आ जाता है तो अब ली मा'ज़ूर है. हां अगर पूरा अक़ वक्त अैसा गुज़र गया के अक़ बार ली कतरा न आया तो मा'ज़ूर न रहा फिर जब कली पहली डालत आई (या'नी सारा वक्त मुसल्लल भरज़ हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गया. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 385)

﴿4﴾ **मा'ज़ूर का वुजू** उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सभब मा'ज़ूर है हां अगर दूसरी कोई चीज़ वुजू तोडने वाली पाई गई तो वुजू जाता रहा म-सलन जिस को रीह पारिज होने का भरज़ है कतरा निकलने से उस का वुजू टूट जाओगा. और जिस को कतरे का भरज़ है उस का रीह पारिज होने से वुजू जाता रहेगा. (अैज़न, स. 586)

﴿5﴾ **मा'ज़ूर ने किसी डदस** (या'नी वुजू तोडने वाले अमल) के बा'द वुजू किया और वुजू करते वक्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सभब मा'ज़ूर है फिर वुजू के बा'द वोह उज़र वाली चीज़ पाई गई तो वुजू टूट गया (येह हुक़म ईस सूरत में होग़ा जब मा'ज़ूर ने अपने उज़र के बज्अे किसी दूसरे सभब की वजह से वुजू किया हो अगर अपने उज़र की वजह से वुजू किया तो बा'दे वुजू उज़र पाओ जाने की सूरत में वुजू न टूटेगा) म-सलन जिस को कतरा आता था उस की रीह पारिज हुई और उस ने वुजू किया और वुजू करते वक्त कतरा बन्द था और वुजू करने के बा'द कतरा आया तो वुजू टूट गया. हां अगर वुजू के दरमियान कतरा जारी था तो न गया.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 387, ००१, ००२, ००३, ००४, ००५, ००६, ००७, ००८, ००९, ०१०, ०११, ०१२, ०१३, ०१४, ०१५, ०१६, ०१७, ०१८, ०१९, ०२०, ०२१, ०२२, ०२३, ०२४, ०२५, ०२६, ०२७, ०२८, ०२९, ०३०, ०३१, ०३२, ०३३, ०३४, ०३५, ०३६, ०३७, ०३८, ०३९, ०४०, ०४१, ०४२, ०४३, ०४४, ०४५, ०४६, ०४७, ०४८, ०४९, ०५०, ०५१, ०५२, ०५३, ०५४, ०५५, ०५६, ०५७, ०५८, ०५९, ०६०, ०६१, ०६२, ०६३, ०६४, ०६५, ०६६, ०६७, ०६८, ०६९, ०७०, ०७१, ०७२, ०७३, ०७४, ०७५, ०७६, ०७७, ०७८, ०७९, ०८०, ०८१, ०८२, ०८३, ०८४, ०८५, ०८६, ०८७, ०८८, ०८९, ०९०, ०९१, ०९२, ०९३, ०९४, ०९५, ०९६, ०९७, ०९८, ०९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

﴿6﴾ **मा'ज़ूर को अैसा उज़र** हो के जिस के सभब कपडे नापाक हो जाते हैं

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے کیتاબ میں صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم پر دھڑکے پا ک لیا تو جب تک میرا نام اُس میں
 رહેگا کیریتے اُس کے لیے اِستغفار کرتے رہے گے. (ابن ماجہ)

આયત લિખે હુએ કાગઝ કે પિછલે હિસ્સે કે છૂને કા અહમ મસ્અલા

કિતાબ યા અખ્બાર મેં જિસ જગહ આયત લિખી હૈ ખાસ ઉસ જગહ કો બિલા વુઝૂ હાથ લગાના જાઈઝ નહીં ઉસી તરફ હાથ લગાયા જિસ તરફ આયત લિખી હૈ ખ્વાહ ઉસ કી પુશ્ત પર (યા'ની લિખી હુઈ આયત કે ઐન પીછે) દોનોં ના જાઈઝ હૈં (આયત યા ઉસ કે ઐન પિછલે હિસ્સે કે ઈલાવા), બાકી વરક કે છૂને મેં હરજ નહીં, પઢના બે વુઝૂ જાઈઝ હૈ. નહાને કી હાજત હો તો (પઢના ભી) હરામ હૈ. وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

(ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 4, સ. 366)

બે વુઝૂ કુરઆને મજીદ કો કહીં સે ભી નહીં છૂ સકતા

બે વુઝૂ આયત કો છૂના તો ખુદ હી હરામ હૈ અગર્યે આયત કિસી ઔર કિતાબ મેં લિખી હો મગર કુરઆને મજીદ કે સાદા હાશિયા બલ્કે પુઢોં બલ્કે ચોલી (યા'ની જો કપડા યા ચમડા ગત્તે કે સાથ ચિપકા યા સિલા હો ઉસ) કા ભી છૂના હરામ હૈ હાં “જુઝદાન” મેં હો તો જુઝદાન કો હાથ લગા સકતા હૈ. બે વુઝૂ અપને સીને સે ભી મુસ્હફ શરીફ કો મસ નહીં કર (યા'ની છૂ નહીં) સકતા. બે વુઝૂ કી ગરદન પર લમ્બી ચાદર કા એક કોના પડા હુવા હૈ ઔર વોહ ઉસ કે દૂસરે કોને કો હાથ પર રખ કર મુસ્હફ શરીફ છૂના યાહે અગર ચાદર ઈતની લમ્બી હૈ કે ઉસ શખ્સ કે ઉઠને બૈઠને સે દૂસરે ગોશે (યા'ની કોને) તક હ-ર-કત ન પહોંચેગી તો જાઈઝ હૈ વરના નહીં. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 4, સ. 724, 725)

વુઝૂ મેં પાની કા ઘસરાફ

આજ કલ અક્સર લોગ વુઝૂ મેં તેઝ નલ ખોલ કર બે તહાશા પાની બહાતે હૈં, હત્તા કે બા'ઝ તો વુઝૂખાને પર આતે હી નલ ખોલ દેતે

करमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुइद पाक पढा अल्लाह उरस पर एस रइमते बेजता है. (स्म)

हैं, एस के बा'द आस्तीन यढाते हैं, उतनी देर तक **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** पानी ञाअेअ ङोता रहता है, एसी तरह मसह के दौरान अकसरियत नल पुला ङोड देती है ! हम सभ को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से डर कर एसराफ़ से भयना याडिये, डियामत के रोज ञरें ञरें और कतरे कतरे का हिसाभ ङोगा. एसराफ़ की मजम्मत में यार अल्लाहसे मुभा-रका सुनिये और भौके पुढा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** से लरजिये :

«1» ज़री नहर पर भी एसराफ़

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे रसूल, रसूले मकबूल, सय्यिदुल आभिना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के गुलशन के मडकते झूल उररते सय्यिदुना सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** पर गुजरे तो वोड वुजू कर रहे थे. एसशदि फ़रमाया : येड एसराफ़ कैसा ? अर्र की : क्या वुजू में भी एसराफ़ है ? फ़रमाया : “हां अगर्थे तुम ज़री नहर पर ङो.”

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ١ ص ٢٠٤ حَدِيثُ ٤٢٠)

आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का इतला

भेरे आका आ'ला हज़रत, एसमामे अडले सुन्नत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** एस उदीसे पाक के तइत फ़रमाते हैं : उदीस ने नहरे ज़री में भी एसराफ़ साबित फ़रमाया और एसराफ़ शर-अ में मजभूम ङी ङो कर आया है. आयअे करीमा :

وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ (तर-ज-मअे कन्जुल एसमान : बेशक बे ज़ा
السَّرْفِينِ (प १०८ الانعام: १६१) अरयने वाले उसे पसन्द नडी.)

मुत्वक है तो येड एसराफ़ भी मजभूम व मन्नूअ ङी ङोगा बडके पुढ एसराफ़ झिल वुजू में भी सीगअे नड्य वारिद और नड्य उकीकतन मुझीदे तडरीम. (या'नी वुजू में एसराफ़ की नड्य (मुमा-न-अत) का हुकम आया है

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ટર્કી)

और छकीकत में मुमा-न-अत का हुक्म हराम होने का झांखेदा देता है।

(इतावा २-अविध्या मुभर्रजा, जि. 1, स. 731)

मुफ्ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ كِي तइसीर

मुफ्त्सिरे शहीर હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ

આ'લા હઝરત عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى કે ફતવા મેં પેશ કર્દા સૂ-રતુલ અન્-આમ કી આયતે કરીમા નમ્બર 141 કે તહ્ત બે જા ખર્ય (યા'ની ઇસરાફ) કી તફ્સીલ બયાન કરતે હુએ રકમ તરાઝ હેં : “ના જાઈઝ જગહ પર ખર્ય કરના ભી બે જા ખર્ય હૈ ઓર સારા માલ ખૈરાત કર કે બાલ બચ્ચોં કો ફકીર બના દેના ભી બે જા ખર્ય હૈ, ઝરૂરત સે ઝિયાદા ખર્ય ભી બે જા ખર્ય હૈ ઇસી લિયે આ'જાએ વુઝૂ કો (બિલા ઇજાઝતે શર-ઈ) યાર બાર ધોના ઇસરાફ માના ગયા હૈ.”

(નૂરુલ ઇસ્ફાન, સ. 232)

﴿2﴾ ઇસરાફ ન કર

હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન ઉમર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ફરમાતે

હેં : અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કે મહબૂબ, દાનાએ ગુયૂબ, મુનઝ્ઝહુન અનિલ ઉયૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને એક શપ્સ કો વુઝૂ કરતે દેખા, ફરમાયા : ઇસરાફ ન કર ઇસરાફ ન કર.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ ج ١ ص ٢٥٤ حديث ٤٢٤)

﴿3﴾ ઇસરાફ શૈતાની કામ હૈ

હઝરતે સય્યિદુના અનસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત હૈ : વુઝૂ મેં

બહુત સા પાની બહાને મેં કુછ ખૈર (ભલાઈ) નહીં ઓર વોહ કામ શૈતાન કી તરફ સે હૈ.

(كُنُزُ الْعَمَال ج ٩ ص ٤٤٤ حديث ٢٦٢٠٠)

﴿4﴾ જન્નત કા સફેદ મહલ માંગના કેસા ?

હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ ઇબને મુગફફલ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને

અપને બેટે કો ઇસ તરહ દુઆ માંગતે સુના, કે ઇલાહી عَزَّ وَجَلَّ ! મૈં તુઝ સે

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक वोह बढ अप्त हो गया. (उंन)

જન્મત કા દાહ્નની (યા'ની સીધી) તરફ વાલા સફેદ મહલ માંગતા હું. તો ફરમાયા કે એ મેરે બચ્ચે ! અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ سے જન્મત માંગો ઓર દોઝખ સે ઉસ કી પનાહ માંગો. મેં ને રસૂલુલ્લાહ ﷺ કો ફરમાતે સુના કે ઈસ ઉમ્મત મેં વોહ કૌમ હોગી જો વુઝૂ ઓર દુઆ મેં હદ સે તજાવુઝ કિયા કરેગી.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ۱ ص ۶۸ حدیث ۹۶)

મુફસ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ઈસ હદીસે પાક કે તહત ફરમાતે હેં : દુઆ મેં તજાવુઝ (યા'ની હદ સે બઢના) તો યેહ હે કે એસી બાત કા તઅય્યુન કિયા જાએ જિસ કી ઝરૂરત નહીં જૈસે ઉન કે સાહિબ ઝાદે ને કિયા. ફિરદૌસ (જો કે સબ સે આ'લા જન્મત હે ઉસ કા) માંગના બહુત બેહતર હે કે ઈસ મેં શખ્સી તઅય્યુન (યા'ની અપની તરફ મુકરર કરના) નહીં નૌઈ તકરુર (નૌઅ યા'ની કિસ્મ મુકરર કરના) હે ઈસ કા હુકમ દિયા ગયા હે.

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 1, સ. 293)

બુરા કિયા, ઝુલ્મ કિયા

એક આ'રાબી ને ખિદમતે અકદસ હુઝૂર સય્યિદે આલમ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن મેં હાઝિર હો કર વુઝૂ કે બારે મેં પૂછા : હુઝૂરે અકદસ ﷺ ને ઉન્હેં વુઝૂ કર કે દિખાયા જિસ મેં હર ઉઝૂવ તીન તીન બાર ધોયા ફિર ફરમાયા : વુઝૂ ઈસ તરહ હે, તો જો ઈસ સે ઝાઈદ કરે યા કમ કરે ઉસ ને બુરા કિયા ઓર ઝુલ્મ કિયા.

(سُنَنِ نَسَائِي ص ۳۱ حدیث ۱۴۰)

ઇસરાફ સિફ દો સૂરતોં મેં હી ગુનાહ હે

મેરે આકા આ'લા હઝરતે ઈમામ અહમદ રઝા ખાન رَحْمَةُ الرَّحْمٰن લિખતે હેં : યેહ વઈદ ઈસ સૂરત મેં હે કે જબ યેહ એ'તિકાદ રખતે હુએ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَبِهِ وَسْمٌ : જો શખ્સ મુઝૂ પર દુરૂદ પાક પઢના બૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા બૂલ ગયા. (ટર્મી)

સિર્ફ એકઆધ બાર વુઝૂ કા તરીકા પઢ લેને સે સહીહ મા'નોં મેં વુઝૂ કરના આ જાએ યેહ બહુત મુશ્કિલ હૈ, બાર બાર મશક કરની હોગી. વુઝૂ સીખને કે લિયે દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી જારી કર્દા V.C.D બનામ : “વુઝૂ કા તરીકા” દેખના ઇન્તિહાઈ મુફીદ હૈ.

મસ્જિદ ઓર મદ્રસે કે પાની કા ઇસરાફ

મસ્જિદ વ મદ્રસે વગૈરા કે વુઝૂખાને કા પાની “વક્ફ” કે હુકમ મેં હોતા હૈ. ઇસ પાની ઓર અપને ઘર કે પાની કે અહકામ મેં ફર્ક હોતા હૈ. જો લોગ મસ્જિદ કે વુઝૂખાને પર બે દર્દી કે સાથ પાની બહાતે હૈં બલકે વુઝૂ મેં બિલા ઝરૂરત ફક્ત ગફલત યા જહાલત કે સબબ તીન સે ઝાઈદ મર્તબા આ'ઝા ધોતે હૈં વોહ ઇસ મુબારક ફતવે પર ખૂબ ગૌર ફરમાએં, ખૌફે ખુદા عَزَّوَجَلَّ સે લરઝેં ઓર તૌબા કરેં. યુનાન્ચે મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, વલિય્યે ને'મત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્એ રિસાલત, મુજદિદે દીનો મિલ્લત, હામિયે સુન્નત, માહિયે બિદ્અત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઇમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાતે હૈં :

अगर वकफ़ पानी से वुजु किया तो जियादा भयं करना बिल इत्तिफ़ाक़ उराम है क्यूंके इस में जियादा भयं करने की इजाजत नहीं दी गई और मदारिस का पानी इसी किस्म का होता है जो के सिर्फ़ उन ही लोगों के लिये वकफ़ होता है जो शर-ई वुजु करते हैं. (इतावा २-अविय्या मुभर्रजा, जि. 1, स. 658)

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! જો અપને આપ કો ઇસરાફ સે નહીં બચા પાતા ઉસે ચાહિયે કે મમ્લૂકા (યા'ની અપની મિલ્કિયત કે) મ-સલન અપને ઘર કે પાની સે વુઝૂ કરે. مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ઇસ કા યેહ મતલબ નહીં કે

﴿1﴾ **करमाने मुस्तफ़ा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक़ हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

जाती पानी के इसराफ़ की ખुલી छूट है बल्के घर में ખूब मशक कर के शर-ई वुजू सीખ ले ताके मस्जिद के पानी का इसराफ़ कर के हराम का मुर-तकिअ न हो.

“अहमद रज़ा” के सात दुइद की निरबत से आ'वा हरत की तरफ़ से इसराफ़ से बयने की 7 तदाबीर

﴿1﴾ **आ'ज** लोग युल्लू लेने में पानी औसा डालते हैं के उबल जाता है डालां के जो गिरा बेकार गया इस से अहतियात खाडिये.

﴿2﴾ **हर** युल्लू बरा होना जरूरी नहीं बल्के जिस काम के लिये लें उस का अन्दाज़ा रभें म-सलन **नाक** में नर्म बांसे (या'नी नर्म हड्डी) तक पानी यढाने को पूरा युल्लू कया जरूर निस्फ़ (या'नी आधा) भी काफ़ी है बल्के बरा युल्लू कुल्ली के लिये भी दरकार नहीं.

﴿3﴾ **लोटे** की टोंटी मु-तवस्सित मो'तदिल (या'नी दरमियानी) खाडिये के न औसी तंग के पानी ब-देर (या'नी देर में) दे न इराफ़ (या'नी कुशादा) के ड़ाजत से ज़ियादा गिराअे, इस का इर्क़ यूं मा'लूम हो सकता है के कटोरों में पानी ले कर वुजू कीजिये तो अहुत ખर्य ड़ोगा यूंही इराफ़ (या'नी कुशादा) टोंटी से अडाना ज़ियादा ખर्य का आइस है. अगर लोटा औसा (या'नी कुशादा टोंटी वाला) हो तो अहतियात करे पूरी धार न गिराअे बल्के आरीक. (नल ખोलने में भी इन्हीं आतों का ખयाल रખिये)

﴿4﴾ **आ'जा** धोने से पहले उन पर लीगा ड़ाथ इर ले, के पानी जल्ल दौउता है और थोडा (पानी), अहुत (से पानी) का काम देता है, ખुसूसन मौसिमे सरमा (या'नी सर्दियों) में इस की ज़ियादा ड़ाजत है के आ'जा में ખुशकी ड़ोती है और अहती धार बीय में जगड़ ખाली ड़ोड़ देती है जैसा के मुशा-हदा (या'नी देषी लाली आत) है.

﴿ 5 ﴾ इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ हुइद शरीक पड़ेगा में डियामत के दिन उस की शक़ामत कइंगा. (क़ुरआन)

﴿5﴾ कलाईयों पर बाल छों तो तरश्वा (या'नी कटवा) दें के उन का डोना पानी जियादा याडता है और मूंडने से बाल सप्त डो जाते हैं और तराश्ना मशीन से बेहतर के भूब साफ़ कर देती है और सभ से अहसन व अइजल नूरा (अक तरह का बाल सफ़ा पाउडर) है के एन आ'जा में येही सुन्नत से साबित. युनान्ये

उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जब नूरा का 'इस्ति'माल इरमाती हैं : रसूलुद्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नूरा का 'इस्ति'माल इरमाते तो सत्रे मुकदस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाकी ब-दने मुनव्वर पर अजवाजे मुतह्हरात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ लगा देतीं.

(ابن ماجه 4 ص 226 حديث 3701)

और ऐसा न करें तो धोने से पहले पानी से भूब त्रिगो लें के सभ बाल बिछ जाअें वरना जडे बाल की जड में पानी गुजर गया और नोक से न बडा तो वुजू न डोगा.

﴿6﴾ दस्त व पा (हाथ व पाँउ) पर अगर लोटे से धार डालें तो नाभुनों से कोडनियों या (पाँउ के) गट्टों के ठीपर (या'नी टप्पों) तक अलल 'इत्तिसाल (या'नी मुसव्सल) उतारें के अक बार में हर जगह पर अक डी बार गिरे, पानी जब के गिर रडा है और हाथ की रवानी (खिलजुल) में देर डोगी तो अक जगह पर मुकरर (या'नी बार बार) गिरेगा. (और 'इस तरह 'इसराफ़ की सूरत पैदा डो सकती है)

﴿7﴾ बा'ज लोग यूं करते हैं के नाभुन से कोडनी तक या (पाँउ के) गट्टे तक बछाते लाअे फिर दोबारा सेडबारा के लिये जो नाभुन की तरफ़ ले गअे तो हाथ न रोका बढे धार जारी रभी ऐसा न करें, के तस्लीस के 'इवज (या'नी तीन बार के बजअे) पांच बार डो जाअेगा बढे हर बार कोडनी

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (બુખારી)

યા (પાઉ કે) ગટ્ટે તક લા કર ધાર રોક લેં ઓર રુકા હુવા હાથ નાખુનોં તક લે જા કર વહાં સે ફિર ઈજરા (પાની જારી) કરેં, કે સુન્નત યેહી હૈ કે નાખુન સે કોહનિયોં યા ગટ્ટોં (ટખ્નોં) તક પાની બહે ન ઈસ કા અક્સ. (યા'ની ઉલટ. મતલબ યેહ કે કોહની યા ગટ્ટે સે નાખુનોં કી તરફ પાની બહાતે હુએ લે જાના સુન્નત નહીં)

કૌલે જામેઅ યેહ હૈ કે સલીકે સે કામ લેં. ઈમામે શાફેઈ રહ્માને કયા ખૂબ ફરમાયા : “સલીકે સે ઉઠાઓ તો થોડા ભી કાફી હો જાતા હૈ ઓર બદ સલીકગી પર તો બહુત (સા) ભી કિફાયત નહીં કરતા.” (અઝ ઈફાદાતે ફતાવા ર-અવિયા મુખર્રજા, જિ. 1, સ. 765, 770)

“યા રબ ઇસરાફ સે બચા” કે ચૌદહ હુરૂફ કી નિરબત સે ઇસરાફ સે બચને કે લિયે 14 મ-દની ફૂલ

﴿1﴾ આજ તક જિતના ભી ના જાઈઝ ઈસરાફ ક્રિયા હૈ, ઉસ સે તૌબા કર કે આયિન્દા બચને કી ભરપૂર કોશિશ શુરૂઅ કીજિયે.

﴿2﴾ ગૌરો ફિક કીજિયે કે એસી સૂરત મુ-તઅય્યન (યા'ની મુકર્રર) હો જાએ કે વુઝૂ ઓર ગુસ્લ ભી સુન્નત કે મુતાબિક હો ઓર પાની ભી કમ સે કમ ખર્ચ હો. અપને આપ કો ડરાઈયે, કે ક્રિયામત મેં એક એક ઝરેં ઓર કતરે કતરે કા હિસાબ હોના હૈ. અલ્લાહ તબા-ર-ક વ તઆલા પારહ 30 સૂ-રતુઝ્ઝિઝલઝાલ આયત નમ્બર 7 ઓર 8 મેં ઈશાદિ ફરમાતા હૈ :

فَسَنْ يَّعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا	તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : તો જો એક
يِّرْكًا ۖ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا	ઝર્ા ભર ભલાઈ કરે ઉસે દેખેગા ઓર જો
شَرًّا يَّرْكًا	એક ઝર્ા ભર બુરાઈ કરે ઉસે દેખેગા.

﴿3﴾ વુઝૂ કરતે વક્ત નલ એહતિયાત સે ખોલિયે, દૌરાને વુઝૂ મુઝ્કિના

करमाने सुस्तफ़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो के तुम्हारा दुरुद मुज तक पहुँचता है. (प्रति)

सूरत में अेक हाथ नल के दस्ते पर रभिये और ज़रूरत पूरी होने पर बार बार नल बन्द करते रहिये.

«4» नल के मुकाबले में लोटे से वुजू करने में पानी कम भर्य होता है जिस से मुम्किन हो वोह लोटे से वुजू करे, अगर नल के बिगैर गुजारा नहीं तो मुम्किन सूरत में येह भी किया जा सकता है के जिन जिन आ'जा में आसानी हो वोह लोटे से धो ले. नल से वुजू करना ज़रूरत है, अस किसी तरह भी ईसराफ़ से बचने की सूरत निकालनी चाहिये.

«5» भिस्वाक, कुल्ली, गर-गरा, नाक की सफ़ाई, दाढी और हाथ पाँउ की उँगलियों का बिलाल और मस्ह करते वक्त अेक भी कतरा न टपकता हो यूँ अच्छी तरह नल बन्द करने की आदत बनाईये.

«6» बिल भुसूस सईयों में वुजू या गुस्ल करने नीज बरतन और कपडे वगैरा धोने के लिये गर्म पानी के हुसूल की जातिर नल षोल कर पाँउप में जम्भ शुधा ठन्डा पानी यूँ ही बहा देने के बजाअे किसी बरतन में पहले निकाल लेने की तरकीब बनाईये.

«7» हाथ या मुँह धोने के लिये साबुन का जाग बनाने में भी पानी अेहतियात से भर्य कीजिये. म-सलन हाथ धोने के लिये युल्हू में पानी के थोडे कतरे डाल कर साबुन ले कर जाग बनाया जा सकता है अगर पहले से साबुन हाथ में ले कर पानी डालेंगे तो पानी ज़ियादा भर्य हो सकता है.

«8» ईस्ति'माल के आ'द अैसी साबुन दानी में साबुन रभिये जिस में पानी बिल्कुल न हो, पानी में रभ देने से साबुन धुल कर आअेअ होगा. हाथ धोने के बेसीन के कनारों पर भी साबुन न रभा जाअे, के पानी की वजह से जल्दी धुल जाता है.

ईरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस मरतबा हुज़ुद पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रहुमतें नाज़िल करमाता है. (अंज़ा)

﴿9﴾ पी चुकने के बाद गिलास में बचा हुआ पानी ड़ेंक देने के बजाए दूसरे को पिला दीजिये या किसी और इस्ति'माल में लीजिये.

﴿10﴾ इल, कपडे, भरतन और इर्श बल्के याय का कप या अेक यम्मय भी धोते वक्त नीज़ नल षोल कर इस कदर ज़ियादा गैर ज़रूरी पानी बछाने का आज़ कल रवाज़ है के हुस्सास और द़िल जले आदमी से देखा नहीं जाता !!! अै काश !

शायद के उतर ज़अे तरे द़िल में मेरी बात

﴿11﴾ अक्सर भस्जिदों, घरों, द़इतरो, दुकानों वगैरा में ष्वाड म ष्वाड दिन रात बत्तियां जलती A.C. और पंखे चलते रहते हैं, ज़रूरत पूरी हो जाने के बाद बत्तियां, पंखे और A.C. और कम्प्यूटर वगैरा बन्द कर देने की आदत बनाईये, हम सभी को हिसाबे आभिरत से उरना और हर मुआ-मले में इसराइ से बचते रहना चाहिये.

﴿12﴾ इस्ति'माले में लोटा इस्ति'माल कीजिये के इव्वारे से तहारत करने में पानी भी ज़ियादा षर्य़ होता है और पाँउ भी अक्सर आलूदा हो जाते हैं. हर अेक को चाहिये के हर बार पेशाब करने के बाद अेक लोटा पानी ले कर W.C. के कनारों पर थोडा सा बछाअे फिर कदरे ऒपर से (मगर छींटों से बचते हुअे) अडे सूराष में डाल द़िया करे اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बढबू और जरासीम की अइज़ाईश में कमी होगी. "इलश टेंक" से सफ़ाई में पानी बहुत ज़ियादा सई होता है.

﴿13﴾ नल से कतरे टपक्ते रहते हों तो इरन इस का डल निकालिये वरना पानी ज़अेअ होता रहेगा. बसा अवकात मसाजिद व मदारिस के नल टपक्ते रहते हैं मगर कोई पूछने वाला नहीं होता ! इन्तिज़ामिया को अपनी जिम्मादारी समज़ते हुअे अपनी आभिरत की बेहतरी के लिये इरन कोई तरकीब करनी चाहिये.

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शअ्स है. (तर्जुमै)

﴿14﴾ पाना पाने, याय या कोई मशरूब पीने, इल काटने वगैरा मुआ-मलात में भूब अहतियात इरमाईये ताके हर दाना, हर गिजाई उर्रा और हर कतरा ईस्ति'माल हो जाये.

40 म-दनी इलों का र-जवी गुलदस्ता

(तमाम म-दनी इल इतावा र-जविय्या मुभर्रज्ज जिल्द 4 के आभिर में दिये हुअे “इवाईद जलीला” सफ़हा 613 ता 746 से लिये गअे हैं)

☀ वुजू में आंभें ज़ोर से न बन्द करे मगर वुजू हो जायेगा
 ☀ अगर लब (या'नी डोंट) भूब ज़ोर से बन्द कर के वुजू किया और कुल्ली न की वुजू न होगी ☀ वुजू का पानी रोजे कियामत नेकियों के पद्ले में रभा जायेगा. (मगर याद रहे ! ज़रत से ज़ियादा पानी गिराना ईसराफ़ है) ☀ मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दांत मांजना अदाअे सुन्नत व हुसूले सवाब के लिये काफ़ी नहीं, हां मिस्वाक न हो तो उंगली या भर-भरा (या'नी पुर-दरा) कपडा अदाअे सुन्नत कर देगा और औरतों के लिये मिस्वाक मौजूद हो जब त्नी मिस्सी काफ़ी है ☀ अंगूठी ढीली हो तो वुजू में उसे फिरा कर पानी डालना सुन्नत है और तंग हो, के बे ज़ुम्बिश दिये पानी न पछोंये तो इर्ज़. येही हुकम बाली (या'नी कान के जेवर) वगैरा का है ☀ आ'ज़ा का मल मल कर धोना वुजू और गुस्ल दोनों में सुन्नत है ☀ आ'ज़ाअे वुजू धोने में हद्दे शर-ई से ईतनी पफ़ीफ़ तहरीर (या'नी हर तरफ़ से मा'भूली सा) बढाना जिस से हद्दे शर-ई तक ईस्तीआब (या'नी मुकम्मल होने) में शुभा न रहे वाजिब है ☀ वुजू में कुल्ली या नाक में पानी डालने का तर्क मक़रूह है और ईस की आदत डाले तो गुनहगार होगी. येह मस्अला वोह लोग भूब याद रभें जो कुद्लियां अैसी नहीं करते के हल्क तक हर चीज़ को धोअें और वोह के पानी जिन की नाक को (इकत) छू जाता है सूंध कर उीपर नहीं

ફરમાને મુસ્તકા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर हुइरे पाक न पड़े. (एम)

ચઢાતે યેહ સબ લોગ ગુનહગાર હેં ઔર ગુસ્લ મેં તો ઐસા ન હો તો સિરે સે ન ગુસ્લ હોગા ન નમાઝ ❀ વુઝૂ મેં હર ઉઝૂવ કા પૂરા તીન બાર ધોના સુન્નતે મુઅક્કદા હૈ, તર્ક કી આદત સે ગુનહગાર હોગા ❀ વુઝૂ મેં જલ્દી ન ચાહિયે બલ્કે દરંગ (યા'ની ઈત્મીનાન) વ એહતિયાત કે સાથ કરે. અવામ મેં જો મશહૂર હૈ કે “વુઝૂ જવાનોં કા સા, નમાઝ બૂઢોં કી સી” યેહ વુઝૂ કે બારે મેં ગલત હૈ ❀ મુંહ ધોને મેં ન ગાલોં પર ડાલે ન નાક પર ન ઝોર સે પેશાની પર, યેહ સબ અફઆલ જુહ્લાલ (યા'ની જાહિલોં) કે હેં બલ્કે બા આહિસ્તગી બાલાએ પેશાની (યા'ની પેશાની કે ઊપર) સે ડાલે કે ઠોડી સે નીચે તક બહતા આએ ❀ વુઝૂ મેં મુંહ સે ગિરતા હુવા પાની મ-સલન કલાઈ પર લિયા ઔર (કલાઈ પર) બહા લિયા (યા'ની મુંહ ધોને મેં મુંહ સે ગિરને વાલે પાની સે હાથ કી કલાઈ નહીં ધો સકતે કે) ઈસ સે વુઝૂ ન હોગા ઔર ગુસ્લ મેં (મુઆ-મલા જુદા હૈ) મ-સલન સર કા પાની પાઉં તક જહાં જહાં ગુઝરેગા પાક કરતા જાએગા વહાં નએ પાની કી ઝરરત નહીં ❀ આદમી વુઝૂ કરને બૈઠા ફિર કિસી માનેઅ (યા'ની રુકાવટ) કે સબબ તમામ (યા'ની મુકમ્મલ) ન કર સકા તો જિતને અફઆલ કિયે ઉન પર સવાબ પાએગા અગર્યે વુઝૂ ન હુવા ❀ જિસ ને ખુદ હી કસ્દ (યા'ની ઈરાદા) કિયા કે આધા વુઝૂ કરેગા વોહ ઈન અફઆલ પર સવાબ ન પાએગા, યૂંહી જો વુઝૂ કરને બૈઠા ઔર બિલા ઉઝૂર નાકિસ (યા'ની અધૂરા) છોડ દિયા વોહ ભી જિતને અફઆલ બજા લાયા ઉન પર મુસ્તહિકે સવાબ ન હોના ચાહિયે ❀ અગર સર પર મીંહ (યા'ની બારિશ) કી બૂદેં ઈતની ગિરીં કી ચહારુમ (યા'ની ચૌથાઈ) સર ભીગ ગયા મસ્હ હો ગયા અગર્યે ઈસ શપ્સ ને હાથ લગાયા ન કસ્દ (યા'ની ન નિચ્યત વ ઈરાદા) કિયા ❀ ઓસ (યા'ની શબનમ) મેં સર બરહૂના (યા'ની નંગે સર) બૈઠા ઔર ઉસ સે ચહારુમ સર કે કદર ભીગ ગયા મસ્હ

करमाने मुस्तफ़اً : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

हो गया ❁ धतने गर्म या धतने सर्द पानी से वुजू मकरूह है जो बदन पर अस्थी तरह न डाला जाये, तक्मीले सुन्नत न करने दे, और अगर कोई इर्ज़ पूरा करने से मानेअ (या'नी रुकावट) हुवा तो वुजू ही न होगी ❁ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी भर्य) करना या इंक देना हराम है. (अपने या दूसरे के पीने के भा'द गिलास या जग का बया हुवा पानी प्वाह म प्वाह इंक देने वाले तौबा करें और आयिन्दा इस से बयें) ❁ नाफ़ से जर्द पानी बह कर निकले वुजू जाता रहे ❁ भून या पीप आंभ में बहा मगर आंभ से बाहर न गया तो वुजू न जायेगा उसे कपडे से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगी ❁ जम्म पर पट्टी बंधी है उस में भून वगैरा लग गया अगर इस काबिल था के बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुजू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक ❁ कतरा उतर आया या भून वगैरा जकर (या'नी उजूवे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराभ से बाहर न आये वुजू न जायेगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराभ के मुंह पर यमकना (वुजू तोडने के लिये) काड़ी है ❁ ना बालिग न कम्बी बे वुजू हो न जुनुब (या'नी बे गुस्ला). धन्हें (या'नी ना बालिगान को) वुजू व गुस्ल का हुक्म आदत डालने और आदाब सिपाने के लिये है वरना किसी हदस (या'नी वुजू तोडने वाले अमल) से धन का वुजू नहीं जाता न जिमाअ से धन पर गुस्ल इर्ज़ हो ❁ बा वुजू ने मां बाप के कपडे या उन के पाने के लिये इल या मस्जिद का इर्श सवाब के लिये धोया पानी मुस्ता'मल न होगी अगर्थे येह अइआल कुरबत (या'नी रिजाअे धलाही) के हें ❁ ना बालिग का पाक हाथ या बदन का कोई जुज अगर्थे बे वुजू हो पानी में डालने से काबिले वुजू रहेगा ❁ बदन सुथरा रभना, मैल दूर करना, शर-अ में मतलूब है के धस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीज़गी व सफ़ाई) पर है. इस नियत

करमाने मुस्तका : حَسْبُكَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीक पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजगा.

(अनसरी)

से आ वुजू ने बदन धोया तो कुरबत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा ❀ मुस्ता'मल पानी पाक है इस से कपडा धो सकते हैं मगर इस से वुजू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मकड़ह (तन्जीडी) है ❀ पराया पानी बे इजाजत ले गया अगर्चे जबर दस्ती या युरा कर उस से वुजू हो जायेगा मगर हराम है. अलबत्ता किसी के मखूक (या'नी भिखियत के) कूंमें से उस की मुमा-न-अत पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज है ❀ जिस पानी में माअे मुस्ता'मल की धार पड़ोयी या वाजेह कतरे गिरे उस से वुजू न करना बेहतर ❀ जाडे में वुजू करने से सर्दी अहुत मा'लूम होगी इस की तकलीफ होगी मगर किसी मरज का अन्देशा नहीं तो तयम्मुम की इजाजत नहीं ❀ शैतान के थूक और झूंक से नमाज में कतरे और रीह का शुबा हो जाता है, हुकम है के जब तक अैसा यकीन न हो जिस पर कसम आ सके इस (वस्वसे) पर लिहाज न करे, शैतान कहे के तेरा वुजू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले के अभीस तू जूटा है और अपनी नमाज में मशगूल रहे ❀ मस्जिद को हर दिन की यीज से बयाना वाजिब है अगर्चे पाक हो जैसे लुआबे दहन (मुंह की राल, थूक, बलगम) आबे बीनी (म-सलन रीठ या नाक से नजले का बहने वाला पानी) आबे वुजू ❀ तम्बीह : आ'ज लोग, के वुजू के आ'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ जाडते हैं (येह) महज्ज हाराम और ना जाइज है. ❀ पानी में पेशाब करना मुत्लकन मकड़ह है अगर्चे दरिया में हो ❀ जहां कोई नजासत पडी हो तिलावत मकड़ह है ❀ पानी जाअेअ करना हराम है ❀ माल जाअेअ करना हराम है ❀ जमजम शरीफ से गुस्ल व वुजू बिना कराहत जाइज है (और पेशाब वगैरा कर के ढेले (से पुशक कर लेने) के आ'द (आबे जमजम से) इस्तिन्जा मकड़ह और

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: مَوْلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर कसरत से दुड़दुड़ पाक पढो। बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुड़दुड़ पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्ज़िरत है। (भा.मि.)

નજાસત ધોના (મ-સલન પેશાબ કે બા'દ ટિશૂ પેપર વગૈરા સે સુખાએ બિગૈર) ગુનાહ ❁ (વોહ) ઈસરાફ, કે (જો) ના જાઈઝ વ ગુનાહ હૈ (વોહ) સિફ (ઈન) દો સૂરતોં મેં હોતા હૈ, એક યેહ કે કિસી ગુનાહ મેં સફ (યા'ની ખચ) વ ઈસ્તિ'માલ કરેં, દૂસરે બેકાર મહૂઝ માલ ઝાએઅ કરેં ❁ ગુસ્લે મચ્ચિત સિખાને કે લિયે મુર્દે કો નહલાયા ઔર ઉસે ગુસ્લ દેને કી નિચ્ચત ન કી વોહ ભી પાક હો ગયા ઔર ઝિન્દોં પર સે ભી ફર્ઝ ઉતર ગયા કે ફે'લ બિલ કર્દ કાફી હૈ, હાં બે નિચ્ચત સવાબ ન મિલેગા.

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! હમં ઈસરાફ સે બચતે હુએ શર-ઈ વુજૂ કે સાથ હર વક્ત બા વુજૂ રહના નસીબ ફરમા.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ગમે મદીના, બકીઅ, મગ્ઝિરત ઔર બે હિસાબ જન્નતુલ ફિરદોસ મેં આકા કે પડોસ કા તાલિબ



15 જુલ હિજ્જતિલ હરામ 1435 સિ.હિ.

01-10-2014

બા વુજૂ મરને વાલા શહીદ હૈ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: مَوْلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ અગર તુમ હમેશા બા વુજૂ રહને કી ઈસ્તિતાઅત રખો તો એસા હી કરો કયૂંકે મ-લકુલ મૌત જિસ બન્દે કી રૂહ હાલતે વુજૂ મેં કબ્જ કરતા હૈ ઉસ કે લિયે શહાદત લિખ દી જાતી હૈ. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٩٧ حديث ٢٧٨٢)

યેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઔર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કર્દા રસાઈલ ઔર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેફ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેફ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઔર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

करमाने मुस्तफ़ی علی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم : जो मुझे पर एक दुबड़े शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह उसे के लिये एक क़िरात अज्र लिखता है और क़िरात उछुद पछाउ ज़ितना है. (ज़ेयराज़)

विलादत में आसानी का नुस्खा (मरयम बीबी का झूल)

मरयम बीबी का झूल¹ दर्टे ज़ेह (अब्ये की विलादत का दर्ट) शुज़्अ छोने पर किसी जुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाये तो जैसे जैसे तर होता जायेगा येह खिलता जायेगा और अल्लाहु रब्बुल ईज्जत की ईनायत से मरयम बीबी के झूल की अ-र-कत से अब्ये की विलादत में आसानी होती है.

बिगैर ओपरेशन विलादत हो गई (मरयम बीबी के झूल का फ़ायेदा)

दा'वते ईस्लामी के ज़ामिअतुल मदीना के अक मुदर्रिस म-दनी ईस्लामी भाई का अयान है के मेरे दूसरे अब्ये की विलादत का दिन था, मेरे अब्यों की अम्मी अस्पताल के मप्सूस कमरे (लेबर रूम) में जा चुकी थीं, कुछ ही देर बा'द मुझे म-दनी मुन्ने की विलादत की खुश खबरी मिली. अस्पताल की ईन्तिज़ार ग़ाह में अक शप्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने बातों बातों में मरयम बीबी के झूल का ज़िक्र किया तो मेरे दरयाज़त करने पर उस ने बताया के अगर दर्टे ज़ेह (अब्ये की विलादत का दर्ट) शुज़्अ छोने पर ईस सूजे झूल को किसी जुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाये तो जैसे जैसे तर होता जायेगा येह खिलता जायेगा और ईस का फ़ायेदा येह होता है के अब्ये की विलादत में आसानी होती है. फिर कमोबेश दू साल के बा'द जब तीसरे अब्ये की विलादत का मरहला आया तो लेडी डॉक्टर ने मेरे अब्यों की अम्मी को

1 : ईसे "मरयम बूटी" और "मरयम का पन्ज़ा" भी कहते हैं, पन्जे की शकल खुशक डालत में होती है. पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से मिलना मुम्किन है मक्के मदीने में मक़ामी औरतें और अब्ये ज़मीन पर रख कर थोड़ें बेचते हैं और उन के पास भी मिल सकता है, ईस की आसिय्यत और अ-र-कत से वाकिफ़ आशिकाने रसूल वहां से तबर्कुन वतन लाते और दूसरों को तोड़फ़तन पेश करते हैं. जिस को दैँ उस को ईस्ति'माल का तरीका समजाना ज़रूरी है. कम पुराना हो तो ज़ियादा बेहतर है.

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने किताब में मुज पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ. १)

जेहननी तौर पर ओपरेशन के जरीअे विलादत के लिये तय्यार रहने का कडा, मुजे मरयम बीबी के झूल का जयाल आया तो मैं ने पन्सारी (दिसी दवाओं) की दुकान से मरयम बूटी हासिल कर ली और जब वक्ते विलादत करीब आया तो उसे पानी में डाल दिया, अद्लाह तआला के करम से बिगैर ओपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई. अेक अर्से बा'द यौथे बर्ये पर ली डोक्टर ने ओपरेशन कन्फर्म कर दिया लेकिन मैं ने दीगर अवरादो वजाईफ़ (जो मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब "घरेलू इलाज" में मौजूद हैं) के साथ साथ मरयम बूटी का ली इस्ति'माल किया, यूँ अेक बार फिर बिगैर ओपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई. इस के कमोबेश दो साल बा'द जब पांचवें बर्ये की विलादत मु-तवक्कअ थी तो हम ने अपने घर के करीबी अस्पताल में रुजूअ किया, वहां ली डोक्टर ने मेडीकल रिपोर्ट्स और अपने तजरिबे की रोशनी में ओपरेशन का ही कडा, मैं ने कोशिश कर के रकम का ली इन्तिजाम रखा और अवरादो वजाईफ़ के साथ साथ वक्ते विलादत करीब होने पर मरयम बूटी ली जुले मुंह वाले डिब्बे में पानी में डाल दी, डोक्टर ने बिगैर ओपरेशन विलादत के लिये काफ़ी कोशिश के बा'द ओपरेशन के लिये रकम जम्अ करवाने का बोला के अब ओपरेशन के इलावा यारा नहीं और ओपरेशन का इन्तिजाम शुर्अ कर दिया, रकम बैंक में थी मैं अस्पताल के करीबी अेटीअेम मशीन से रकम निकाल लाया और काउन्टर पर जम्अ करवा दी, लेकिन ओपरेशन से पहले ही अद्लाह جَلَّ وَعَزَّ की अता से तन्दुरुस्त व तुवाना म-दनी मुन्ना पैदा होने की जुश जबररी मिल गई. मरयम बूटी के इस्ति'माल का मैं ने यार या पांच इस्लामी भाईयों को मशवरा दिया उन में से कई अेक को डोक्टर ने ओपरेशन का बोल रखा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ جَلَّ وَعَزَّ उन के यहां ली बिगैर ओपरेशन विलादतें हो गई.

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरुद पाक पढा अदवाह उस पर दस रकमतों भेजता है. (مسلم)

ईडरिस

उन्वान	अंकसंख्या	उन्वान	अंकसंख्या
दुरुद शरीफ़ की इजीवत	1	वुजू की 14 सुन्नतें	12
उस्माने गनी का एशके रसूल	1	वुजू के 29 मुस्तहब्बात	13
गुनाह ज़उने की हिकायत	3	वुजू के 16 मकर्रहात	15
वुजू का सवाब नही मिलेगा	4	धूप के गर्म पानी की वजाहत	16
सारा बदन पाक हो गया !	4	मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला	17
बा वुजू सोने की इजीवत	5	भिट्टी मिले पानी से वुजू होगा या नही	17
बा वुजू मरने वाला शहीद है	5	पान पाने वाले मु-तवज्जह हों	18
मुसीबतों से हिकायत का नुस्खा	5	तसव्वुफ़ का अजीम म-दनी नुस्खा	19
हर वक्त बा वुजू रकने के सात इजा'इल	5	जम्म वगैरा से पून निकलने के 5 अहकाम	20
दुगना सवाब	6	सर्दों से आ'जा इट ज़ा'ओ तो.....	21
सर्दों में वुजू करने की हिकायत	6	वुजू में मेहंटी और सुरमे का मस्अला	22
वुजू का तरीका (ह-नफी)	7	इन्जेकशन लगाने से वुजू टूटेगा या नही ?	22
वुजू के बचे हुए पानी में	9	दुपती आंघ के आंसू	23
70 बीमारियों से शिफ़ा		पाक और नापाक रतूबत	23
जन्नत के आठों दरवाजे खुल जाते हैं	10	छावा और कुड़िया	23
नज़र कभी कमज़ोर न हो	10	कैसे से वुजू कब टूटता है ?	24
वुजू के बा'द तीन बार	11	हंसने के अहकाम	24
सूरअे कद्र पढने के इजा'इल		क्या सत्र देपने से वुजू टूट जाता है ?	25
वुजू के बा'द पढने की दुआ	11	गुस्व का वुजू काफ़ी है	25
वुजू के बा'द येह दुआ भी पढ लीजिये	11	थूक में पून	25
वुजू के चार इरा'इल	12	वुजू में शक आने के 5 अहकाम	26
धोने की ता'रीफ़	12	सोने से वुजू टूटने न टूटने का बयान	26

ईरमाने मुस्तक। على الله تعالى غلبه والله وسلم: श्री शम्स मुज पर दुइडे पाक पढना (मूल गया वोड जन्त का रास्ता मूल गया। (طرائق)

वुजूअे अभियाअे किराम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام	28	शरी नहर पर ली ईसराफ़	37
और नींद मुबारक		आ'ला डजरत का इतवा	37
मसाजिद के वुजूआने	29	मुइती अहमद यार आन की तइसीर	38
घर में वुजूआना बनवाईये	29	ईसराफ़ न कर	38
वुजूआना बनवाने का तरीका	30	ईसराफ़ शैतानी काम है	38
वुजूआने के 9 म-दनी कूल	31	जन्त का सकेद मडल मांगना कैसा ?	38
जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये	32	बुरा किया, लुभ किया	39
6 अडकाम		ईसराफ़ सिर्फ़ दो सूरतों में ही गुनाह है	39
सात मु-तइरिकात	35	अ-मली तौर पर वुजू सीभिये	40
आयत लिभे हुअे कागज के पिछले	36	मखिद और मद्रसे के पानी का ईसराफ़	41
डिस्से के धूने का अहम मअअला		ईसराफ़ से बयने की 7 तदाबीर	42
बे वुजू कुरआने मखद को कहीं से ली	36	ईसराफ़ से बयने के लिये 14 म-दनी कूल	44
नहीं धू सकता		40 म-दनी कूलों का र-जवी गुलदस्ता	47
वुजू में पानी का ईसराफ़	36	विलादत में आसानी का नुस्खा	52

माخذومراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیة بیروت	کنز العمال	مکتبہ اہلی سنن مرکز الاولیاء لاہور	قرآن مجید
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	مرآة المناجیح	دار احیاء التراث العربی بیروت	نور العرفان
دار الفکر بیروت	البحر الرائق	دارالکتب العلمیة بیروت	سنن ابوداؤد
دار الفکر بیروت	در مختار و رد المحتار	دار المعرفہ بیروت	سنن شانی
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	عالمگیری	دار الفکر بیروت	سنن ابن ماجہ
دار الفکر بیروت	مرآة الفلاح	دار الفکر بیروت	مشہد امام احمد
دارالکتب العلمیة بیروت	الجاوہر للفتاوی	دار احیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
دارصادر بیروت	میزان الکبری	دارالکتب العلمیة بیروت	معجم اوسط
روی پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	احیاء العلوم	دارالکتب العلمیة بیروت	معجم صغیر
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	مسائل القرآن	مکتبہ العلوم والحکم مدینہ منورہ	مشہد بزار
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	فتاوی رضویہ	باب المدینہ کراچی	سنن داری
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	مدینہ الاولیاء ملتان	سنن دارقطنی
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	دارالکتب العلمیة بیروت	شعب الایمان

❦ વુઘૂખાનએ અતાર (الوضوء) ❦

ઊપર સે વુઘૂખાને કા નકશા



❦ સીધી તરફ સે વુઘૂખાને કા નકશા



મક-ત-બતુલ મદીના®

દાવટે ઈસ્લામી



ફુઝાને મદીના, ત્રી ડોબિયા બગીચે કે સામને, મિરઝાપુર, અહમદાબાદ-1. ગુજરાત, ઈન્ડિયા
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net